महासती चंदनबाला

आशीर्वाद

गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव

वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव

आर्ष मार्ग संरक्षक, कविहृदय, प्रज्ञायोगी
दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव

रचयित्री
आर्यिका आस्थाश्री माताजी

प्रकाशक
श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन

पुस्तक का नाम	:	**महासती चंदनबाला**
आशीर्वाद	:	**गणाधिपति गणधराचार्य श्री कुन्थुसागरजी गुरुदेव वैज्ञानिक धर्माचार्य श्री कनकनंदीजी गुरुदेव आर्षमार्ग संरक्षक प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्यश्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव**
रचयित्री	:	**आर्यिका आस्थाश्री माताजी**
सहयोग	:	**मुनि श्री विमलगुप्तजी, मुनि श्री विनयगुप्तजी क्षुल्लक श्री धर्मगुप्तजी, क्षुल्लक श्री शांतिगुप्तजी क्षुल्लिका धन्यश्री माताजी, क्षुल्लिका तीर्थश्री माताजी ब्र. केशरबाई**
सर्वाधिकार सुरक्षित	:	**रचनाकाराधीन**
प्रतियाँ	:	**1000**
संस्करण	:	**द्वितीय, वर्ष-2020**
प्रकाशक	:	**श्री धर्मतीर्थ प्रकाशन, धर्मतीर्थ क्षेत्र कचनेर के पास, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)** Email : dharamrajshree@gmail.com
प्राप्ति स्थान		**1. प्रज्ञायोगी दिगम्बर जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदीजी गुरुदेव ससंघ 2. श्री धर्मतीर्थ, औरंगाबाद (महाराष्ट्र) 9421503332 3. श्री नितिन नखाते, नागपुर, 9422147288 4. श्री राजेश जैन (केबल वाले), नागपुर 9422816770 5. श्री रमणलाल साहू जी, औरंगाबाद मो. 9823182922 6. श्री सुबोध जैन, राधेपुरी, दिल्ली 9910582687**
मुद्रक	:	**राजू ग्राफिक आर्ट, जयपुर** Mob. 9829050791 Email : rajugraphicart@gmail.com

आशीर्वाद

आर्यिका आस्थाश्री माताजी को **ग.आ. कुंथुसागर** का आशीर्वाद आप महासतियों और महापुरुषों का जीवन चरित्र लिख रही हैं, सो यह एक अच्छा कार्य है, स्वाध्याय करने वालों को महापुण्यबंध का कारण है। ज्ञान बढ़ाने वाला है, सम्यग्दर्शन दृढ़ करने वाला है, प्रथमानुयोग की कथा ही ऐसी है, जीवन में मोक्षमार्ग को खोल देती है, शीघ्र ही आपकी यह पुस्तक पढ़ने वालों के हाथ में आवें और पढ़ें।

आप लोकोपकारार्थ लिखती रहें, ऐसा मेरा आशीर्वाद।

– ग.आ. कुन्थुसागर

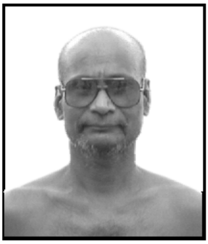

शुभाशीर्वाद

–आचार्य कनकनन्दी

(चाल– तुम दिल की धड़कन)

चंदनबाला की कहानी, लिखी है आर्या 'आस्थाश्री' ने।
शील–संयम की रक्षार्थे, भव्यों को शिक्षा निमित्ते॥
चंदनबाला की जीवनी, संघर्षमय है कहानी।
महानों की है महान् कहानी, नीचों की नीच कहानी॥
भले अन्यायी व दुराचारी, हो कितना भी बलशाली।
होता अवश्य उसका पतन, विजयी होता शीलधारी॥
कहाँ राजकन्या दासी बनी, यह (है) सामाजिक बुराई।
दास प्रथा के निर्मूलन हेतु, महावीर ने क्रान्ति जो लाई॥
पड़गाहन किया दासी ने, आहार भी दिया महावीर को।
हुआ पंचाश्चर्य जिससे, भक्ति/शक्ति का ज्ञान हुआ सभी को॥
आर्यिका बनी चन्दनबाला, बनी है प्रमुख गणिनी।
पतिता से पावन बनी, ऐसी है दिव्य कहानी॥
वाचन–पाचन–आचरण करो, ऐसी दिव्य कहानी।
'कनकनंदी' का आशीष सभी को, बनो सब अध्यात्म ज्ञानी॥

दिनांक
20–8–2014

– **आचार्य कनकनंदी**
हिरणमगरी से. 11, उदयपुर

आशीर्वचन

दोहा– मौसी श्री महावीर की चन्दनबाला मात।
शील परीक्षा जीतकर, सती बनी जगमात।।

यह विश्व तीर्थंकरादि महापुरुष और महासतियों की जीवन गाथा से सुशोभित हो रहा है। इन सतियों में एक चन्दनबाला राजकुमारी महासती हुई है। जिनका यौवन काल संघर्ष से भरा हुआ है। जिसको दर्शाता हुआ यह लघु काय कथा ग्रन्थ 'चन्दनबाला' आपके समक्ष प्रस्तुत है। उत्तर पुराण आदि अनेक ग्रन्थों के आधार से **'आर्यिका आस्थाश्री'** माताजी ने इस ग्रन्थ की रचना की है। जीव अपने शुभाशुभ कर्मों के प्रभाव से क्या–क्या सुख–दुःख पाता है। यह चन्दनबाला की भवावलि व जीवन दर्शन दिखाता है। कहाँ दान धर्म आदि पुण्य क्रियाओं ने उन्हें महाराज चेटक की लाडली पुत्री व प्रियकारिणी, मृगावती, चेलना रानी आदि बहनों की लाडली बहन बनाया। यही नहीं बल्कि भगवान महावीर की मौसी बनने का सौभाग्य भी उन्हें प्राप्त हुआ। परन्तु पूर्वभव में अपनी असहाय विधवा ननद से की गयी ईर्ष्या व अत्याचार से जो कर्म बंधे उसके इस भव में उदय में आते ही कर्मों ने चन्दनबाला को दर–दर की ठोकरें खिलवा दी, जंगल–जंगल भटका दिया। पूर्व भव में अपने पति व ननद के चरित्र पर लगाये गये झूठे लांछन ने उसे बाजारों में बिकवा दिया व भद्रा सेठानी (पूर्व भव की ननद) की ईर्ष्या व द्वेष की पात्र बनी। निर्दोष होने पर भी चरित्र पर झूठा लांछन लगा। मुण्डन, बंधन और कारागृह आदि की घोर यातनायें सहनी पड़ी परन्तु वर्तमान पर्याय की सद्भावना, सच्चरित्र, अखण्ड शीलव्रत की पवित्र भावना ने उन्हें हर संकट से बचा लिया। हर जगह शील की विजय हुई। भगवान महावीर की आश्चर्यकारी

विधि पूर्ण करके उनका निरन्तराय आहार कराकर वे जगत पूज्य हो गयीं और भगवान महावीर स्वामी के केवलज्ञान होने पर उनके समोशरण में उनसे दीक्षित होकर प्रमुख गणिनी आर्यिका होकर वे 36 हजार आर्यिकाओं की सिरमौर हो गयीं।

इस प्रकार महासती चन्दनबाला आर्यिका के सम्पूर्ण जीवन–चरित्र को सरल, रोचक शब्दों में आर्यिका आस्थाश्री माताजी ने प्रस्तुत किया है।

उनका यह प्रयास प्रशंसनीय है। आज जहाँ अनैतिकता और विकृति बढ़ रही है। शील सदाचार गौण होते जा रहे हैं। सर्वत्र उन्मुक्त यौनाचार, अनाचार बढ़ रहा है। वहाँ यह **'चन्दनबाला'** का शील ग्रन्थ इस युग के लिए एक आदर्श सिद्ध होगा।

यह कथा ग्रन्थ हमें सिखाता है– कुशील महादोष है और अश्लीलता महापाप है। आज की नारियों को स्त्री/पुरुषों को शिक्षा लेना चाहिए कि जहाँ चंदनबाला को, विद्याधर से लेकर दास बाजार तक सभी उसे बुरी निगाह से देख रहे थे। हर विकृत दृष्टि उसे विकृत बनाना चाहती थी। वही शीलवती कुमारी चन्दनबाला तटस्थ भाव से निर्विकार रही। एकमात्र प्रभु महावीर में ही उन्होंने अपना ध्यान लगाया और णमोकार मंत्र का जाप करती हुई पंच परमेष्ठी का स्मरण करती रही जिससे वह त्रिलोक पूज्य पद को प्राप्त हुई। यदि यह कथा ग्रन्थ आम जनमानस में प्रचलित हों तो अनैतिकता की ओर बढ़ता यह विश्व आज भी नैतिकता का पायदान प्राप्त कर सकता है।

इस सद्प्रयास के लिए माताजी को मेरा शुभाशीर्वाद। इसे छपाने वाले दातार, महानुभाव, मुद्रक, प्रकाशक, पाठक सबको हमारा शुभाशीर्वाद।

– आचार्य गुप्तिनंदी

25–6–2015, चितरी (राज.)

प्रस्तावना

जैन धर्म में अनेक महान् नारियाँ हुई हैं जिनका उज्ज्वल जीवन चरित्र हमको सन्मार्ग का रास्ता दिखाता है। इन महान सतियों के जीवन में जब भी कष्ट आया तब वे घबराई नहीं। उन्होंने समता के साथ दुःखों का सामना किया। इस कारण इतिहास में अजर–अमर हो गई। हमारे आचार्यों ने उनका उल्लेख ग्रंथों में किया है। जिसको श्रद्धा से आज भी याद किया जाता है। जिनके आगे हर व्यक्ति का मस्तक श्रद्धा से झुक जाता है। जिनकी देवताओं ने आकर पूजा की है। ऐसी एक नहीं अनेक नारियाँ हुई हैं। कुछ नाम तो हमेशा लोग लेते रहते हैं। महारानी सीता, सती अंजना, मनोरमा, द्रोपदी, सोमासती, मैना सुन्दरी, मनोवती, सुरसुंदरी, अनंतमति आदि। उन्हीं में एक सती हुई है जिनका नाम है चंदनबाला। ये 24वें तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की गणिनी आर्यिका थी। 36 हजार आर्यिकाओं की शिरोमणि थी।

गृहस्थ अवस्था की महावीर भगवान की मौसी थी। बाल ब्रह्मचारिणी थी, छोटी सी अवस्था (उम्र) से ही बहुत संघर्ष इनके जीवन में आये, बहुत कष्टों का सामना किया। संसार में पूज्य भी वो ही बनते हैं, जो अपने जीवन में विषमता में भी समता धारण करते हैं। अपने आचरण से दूसरों को कुछ सिखा जाते हैं। हमें चंदनबाला के जीवन से यही प्रेरणा मिलती है, शिक्षा मिलती है। कितना उनको लोगों ने प्रलोभन दिया; परन्तु उन्होंने अपने तन को उन पापी लोगों को छूने नहीं दिया। शील की सुरक्षा स्वयं ने की, धर्म को नहीं छोड़ा। नारी जाति का गौरव बढ़ाया। 7 बहनों में सबसे छोटी होकर भी सबसे बड़ी हो गई। सबके लिए पूज्य बन गई।

उनके जीवन को विस्तार से जानने के लिए यह छोटी सी पुस्तक गुरुमुख से सुनकर व चन्दना के अनेक आख्यानों को पढ़कर अपने ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया तथा उनके पूर्व भव की कथा **'उत्तर पुराण'** आदि अनेक ग्रन्थ के आधार पर लिखी है। आज लोगों के पास इतना समय

नहीं है कि पूरे-पूरे ग्रंथ कोई पढ़ सके। परन्तु मेरी भावना बनी कि छोटी-सी पुस्तक तो हर व्यक्ति पढ़ सकता है। अपने बच्चों को भी पढ़ा सकता है। इन कहानियों के माध्यम से हमारे महापुरुषों के बारे में हमें जानकारी मिल सके।

परम पूज्य **प्रज्ञायोगी आचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव** की प्रेरणा एवं आशीर्वाद से एवं मुनि श्री सुयशगुप्त जी के आशीर्वाद से यह छोटा-सा प्रयास मैंने किया। जिन नारियों ने अच्छा आदर्श प्रस्तुत किया, उनके जीवन को सबके सामने इन किताबों के माध्यम से हम पुनः प्रकाशित करवाये ऐसी हमारी भावना है।

यह चंदनबाला का जीवन चारित्र मैंने श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, सूरजमल विहार, श्रुतपंचमी के दिन दिनांक 2-6-2014 सोमवार को दिल्ली में प्रारम्भ किया और आषाढ़ कृष्णा एकम् 14-7-2014 को श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, प्रीत विहार, दिल्ली में पूर्ण किया।

मेरे दीक्षा दाता **गणधराचार्य श्री कुंथुसागर जी गुरुदेव** एवं दीक्षा शिक्षा दाता वैज्ञानिक धर्माचार्य समतामूर्ति **आचार्यरत्न श्री कनकनंदी जी गुरुदेव** को त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ।

परम पूज्य दिगम्बर **जैनाचार्य श्री गुप्तिनंदी जी गुरुदेव** के चरणों में त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तु करती हूँ। मुनिश्री सुयशगुप्त जी एवं मुनि श्री चन्द्रगुप्त जी को नमोऽस्तु करती हूँ।

सभी पाठकगण गुणग्राही बनकर इस ग्रंथ का स्वाध्याय करें। इस कथा को लिखने में मेरे द्वारा कुछ भी त्रुटि हुई हो तो आप गुणग्रहण का भाव रखते हुए इसका अध्ययन करें। चंदनबाला की तरह हमारी हर एक कन्या आदर्शवान बने। हर एक नारी सदाचारी बने इसी मंगल भावना के साथ पंच परमेष्ठी भगवान के चरणों में नमोऽस्तु।

इस पुस्तक के छपवाने वाले दान दातारों, मुद्रक, प्रकाशक व पाठकों को मंगलमय आशीर्वाद।

-आर्यिका आस्थाश्री

भोलानाथ नगर, दिल्ली

महासती चंदना

दोहा– शासन श्री महावीर का, सदा रहे जयवंत।
प्रभु के पथ पर हम चलें, बन जायें अरहंत॥
गणिनी आर्या चंदना, समता मूरत मात।
कथा लिखूँ मैं आपकी, दो माँ आशीर्वाद।

इस जम्बूद्वीप में प्रथम व अंतिम क्षेत्र में षट्काल परिवर्तन होते हैं। बाकी के चार क्षेत्रों में शाश्वत भोगभूमि की व्यवस्था होती है। विदेह क्षेत्र में हमेंशा चौथा काल होता है। इस विदेह क्षेत्र के बीचोंबीच में सुमेरु पर्वत है। उस सुमेरु पर्वत के पास में ही देवकुरु और उत्तर कुरु क्षेत्र हैं। इसमें उत्तम भोगभूमि की व्यवस्था रहती है। अनेक कल्पकालों के बाद एक हुण्डावसर्पिणी काल आता है। इस काल में जो नहीं होना चाहिये वो होता है। जैसे तीर्थंकर भगवान के पुत्री होना, चक्रवर्ती का मानभंग होना, अनेक पद एक ही महापुरुष को प्राप्त होना, रुद्र की उत्पत्ति होना।

प्रथम तीर्थंकर भगवान का तीसरे काल में ही जन्म और मोक्ष होना। तीर्थंकरों पर उपसर्ग होना आदि। ये सब काल का प्रभाव है। चतुर्थ काल में 23 तीर्थंकर भगवान का जन्म हुआ। हर तीर्थंकर के समवशरण में बारह सभा लगती है। उन सभा में मुख्यता रहती है गणधर भगवान की, भगवान की दिव्य ध्वनि गणधर झेलते हैं और आर्यिकाओं में प्रमुख पद होता है गणिनी आर्यिकाओं का। अन्तिम तीर्थंकर हुये भगवान महावीर स्वामी, इनकी प्रमुख गणिनी थी चंदना आर्या।

कालचक्र अपनी गति से परिवर्तन कर रहा था। उस समय कहीं पर हिंसा की ज्वाला में जीवित पशु की बलि दी जा रही थी। चारों ओर हिंसा, भ्रष्टाचार बढ़ता जा रहा था। अत्याचार बढ़ता जा रहा था। अंतिम तीर्थंकर का जब जन्म हुआ तब चारों और धरती पर हिंसा बहुत बढ़ गई थी।

राजाओं में आपसी मन–मुटाव के कारण छोटे–छोटे गणराज्यों पर आतंकियों का साम्राज्य छा गया था। रक्षक ही भक्षक बन गये थे। मान–मर्यादा, धर्म से विहीन मनुष्य, सदाचार और नैतिक आचरण से भी गिर चुके थे। हिंसा सबके ऊपर राज्य कर रही थी, अहिंसा सिसक–सिसक कर रो रही थी, मानव दानव बन गये थे।

एक तरफ अहिंसा के अवतारी महापुरुष का जन्मोत्सव मनाया जा रहा था। दूसरी तरफ हिंसा में हिंसक लोगों को आनंद आ रहा था। करुणा के रस की वर्षा करने वाले महावीर भगवान प्राणीमात्र में अहिंसा का संदेश जगाने के लिये इस वसुधा पर आये थे। जो हिंसा से दूर रहते थे, जो अपने प्राणों की तरह दूसरे के प्राण समझते थे। जिन्हें सब जीवों के अन्दर एक परमात्मा का रूप दिखता था, वो ही किसी महापुरुष का इंतजार कर रहे थे। जैसा मुझे कष्ट होता है वैसा ही कष्ट इन मूक पशुओं को भी होता है। संसार में सभी जीव जीना चाहते हैं, उन्हें मारने का किसी को अधिकार नहीं है। ऐसी भावना जो–जो प्राणी कर रहे थे वो जब हिंसा, अन्याय, अत्याचार होते हुये देखते थे तब प्रभु से प्रार्थना करते थे। हे प्रभु ! इस रक्त रंजित धरती पर अपना अमृत रस बरसाओ।

जब–जब धरती पर पापियों का साम्राज्य छाया तब–तब किसी न किसी रूप में एक नये महापुरुष ने अवतार लिया। धरती पर सबसे अधिक मनुष्य ही आतंक फैलाता है। तिर्यंच कभी–कभी उपसर्ग करता है, देव भी कभी–कभी कष्ट पीड़ा देते हैं। परन्तु मनुष्य, डाकू–चोर बनकर, दुष्ट भावनाओं से दूसरों को कष्ट देता है। उसी में आनंद मानता है। उस समय राजा लोग भी अपने राज्य की सीमाओं को बढ़ाने के लिये अन्य छोटे गणराज्यों की सीमाओं को हड़प रहे थे, अपना अधिकार जमा रहे थे, सामंत होकर निर्बल राजाओं पर अन्याय, अत्याचार कर रहे थे। बलवान हमेशा निर्बल को अपने सामने झुकाना चाहता है।

आतातायी राजा दूसरी प्रजा को बंदी बनाकर सब कुछ छीन लेते थे, उन्हें प्राणान्तक यातनायें देते थे, तब मृत्यु के भय से दुःखी मनुष्य अपना सब कुछ आंतकी दुष्ट राजाओं को सौंप देते थे।

न्याय नीति पर चलने वाले राजाओं को भी गरीबों के ऊपर हो रहे अन्याय, अत्याचार का पता नहीं चलता था। गरीब की कोई फरियाद नहीं सुनता था, उसकी आवाज को उठने से पहले ही दबा दिया जाता था। यदि कोई हिम्मत करके आगे बढ़ने की कोशिश भी करता तो उच्च पद पर बैठे भ्रष्ट उच्चाधिकारी उसे ही दण्ड दे देते थे व उसके परिवार की महिला कुछ बोले तो उसकी इज्जत लूट ली जाती थी। स्त्री जाति पर उस समय बहुत अत्याचार हुये। वह स्त्री स्वयं राजा की पुत्री ही क्यों ना हो, उसे भी लोगों ने नहीं छोड़ा। स्त्री की सुन्दरता पर मरने वाले पुरुष उसके साथ भोग करते या बाजार में उसे बेच देते थे।

अन्य मत को मानने वाले लोग सत्य को दबाने की कोशिश कर रहे थे। सत्य अकेला होकर भी हार नहीं सकता, उसकी जीत अवश्य ही होती है। सत्य को जानने वाले, मानने वाले लोगों की संख्या कम थी। अहिंसक लोगों की संख्या कम थी, हिंसक लोग अधिक संख्या में थे। अपने-अपने पंथ का प्रचार-प्रसार करने में सब लोग लगे हुये थे। ख्याति, लाभ, पूजा, प्रसिद्धि, हिंसा, घृणा, ईर्ष्या, कलह, द्वेष निरन्तर बढ़ रहा था। ढोंगी धर्म का चोला पहनकर अधर्म का प्रचार कर रहे थे। पाप और हिंसा ही उनके लिये धर्म बन गया था। वे स्वयं रुढ़ियों में फँसे हुये थे और दूसरों को उपदेश देकर और भटकाने का मार्ग बता रहे थे जो स्वयं अपने आपको गुरु मान रहे थे, वो ही सबको छल रहे थे, भगवान महावीर के समय अनेक मत प्रचलित थे। सब लोग अपना-अपना राग अलापने में लगे हुये थे। कोई हिंसामय यज्ञ को ही धर्म मानकर बैठा था, जीवित पशु की बलि देना धर्म है।

माँस खाने में धर्म मानना आदि अनेक कुधर्म को धर्म मानने वाले लोग अपने आपको भगवान मानकर अपनी पूजा करवा रहे थे। उनके पंथ के अनुयायी भी अनेक लोग बन गये थे। एक ही परिवार के लोग अलग–अलग धर्म को मानते थे। राजा बौद्ध धर्म का पुजारी था तो रानी जैन धर्म को मानती थी। कोई गौतम बुद्ध को मानते थे, कोई इन्द्रभूति गौतम को मानते थे। कोई शिव को पूजते थे, कोई अपने राजा को ही भगवान मान बैठे थे। सत्य क्या है, यह ज्ञान किसी को भी नहीं था, जिनके बिना महावीर भगवान की दिव्य ध्वनि नहीं खिरी। ऐसे इन्द्रभूति गौतम स्वयं हिंसामय यज्ञ करवा रहे थे। उसी को धर्म बताकर लोगों को भटका रहे थे। स्वयं को तीर्थंकर से श्रेष्ठ मान रहे थे। मेरे इतने शिष्य हैं। दूर–दूर तक मेरी ख्याति है। संसार में मेरे जैसा ज्ञानी विद्वान महात्मा नहीं है। ऐसा मिथ्या अभिमान जिनके रग–रग में भरा हुआ था। ऐसे इन्द्रभूति गौतम शिष्य बनने के पूर्व महावीर भगवान के विरोध में खड़े थे। स्वयं को भगवान मानने वाले को इतना ज्ञान भी नहीं था कि मुझे इनकी शरण में ही जाना पड़ेगा। ज्ञाता दृष्टा वीतरागी सर्वज्ञ भगवान से तुलना करने वाले प्राणी अपने मति–श्रुत ज्ञान के क्षयोपशम से अमूर्तिक आत्म तत्त्व का अवलोकन नहीं कर सकते।

जिसने अपने मिथ्यात्व का ही त्याग नहीं किया सम्यक्त्व को प्राप्त नहीं किया हो वह आत्मा क्या और परमात्मा क्या है ? आत्मा का स्वरूप क्या है, वह नहीं जान सकता। ऐसे लोग तो केवल अपनी पूजा करवाना चाहते हैं, स्वयं बोलते हैं, मैं सर्वज्ञ हूँ। सब मेरे पास आओ, सब मेरी भक्ति करो। ऐसे सर्वज्ञ बताने वाले को स्वयं के भवों का पता भी नहीं रहता है। पूर्व में क्या थे और आने वाले समय में क्या बनने वाले हैं ?

जैनधर्म में 24 तीर्थंकर होते हैं, जब भगवान मुनि दीक्षा ले लेते हैं उसी दिन से केवलज्ञान नहीं होने तक मौन रहते हैं। मौन इसलिये कि पूर्ण सत्य जब तक प्रगट नहीं हो तब तक मुख से एक शब्द भी उच्चारण नहीं करते हैं।

केवलज्ञान होने के बाद त्रिकाल चराचर ज्ञेय उनके ज्ञान में झलकने लगते हैं तब भगवान भव्यों के पुण्य से दिव्य देशना देते हैं। उपदेश देते हैं सन्मार्ग दिखाते हैं। मुनि अवस्था में भगवान मौन ही रहते हैं। मुनि बनकर मौन साधना में भी भगवान अनेक जीवों का कल्याण कर देते हैं। ये हैं सच्चे सर्वज्ञ, वीतराग प्रभु। हमारे भगवान किसी से नहीं बोलते कि मैं भगवान हूँ। तुम मेरी पूजा करो, जो सर्वज्ञ होते हैं, वीतरागी होते हैं, हितोपदेशी होते हैं, वो किसी की निन्दा–प्रशंसा से, सम्मान–अपमान आदि करने से प्रभावित नहीं होते हैं। वे राग–द्वेष, छल–कपट, क्रोधादि कषायों से रहित हैं। राग–द्वेषादि 18 दोषों से जो रहित हैं ऐसे वीतरागी भगवान ही सच्चे जिनदेव होते हैं।

महावीर भगवान ने जिस भूमि पर जन्म लिया, वहाँ का कण–कण भगवान को पुकार रहा था। छोटे–बड़े राज्यों में सभी प्राणी हिंसा से प्रताड़ित हो रहे थे, सभी जगह अराजकता फैलती जा रही थी, स्त्री असुरक्षित थी। राजकुमार हो या राजकुमारी उसे दासी–दास बनाकर भरे बाजार में बेच दिया जाता था। खरीद कर ले जाना वाला व्यक्ति उनके साथ नौकरों की तरह दुर्व्यहार करता था।

कुण्डलपुर में भगवान के जन्म होने से वहाँ की प्रजा अपने आपको सुरक्षित समझती थी। आनंद के साथ शांति का अनुभव करती थी। जैसे–जैसे भगवान यौवन अवस्था को प्राप्त हुये, वैसे–वैसे जब भगवान को हिंसा अन्याय, अत्याचार, अनीति आताताइयों की क्रूरता का पता चला तो भगवान अंदर से उद्विघ्न हो गये।

वे मन ही मन विचार करने लगे– मुझे इन सब पापों को मिटाना है। अन्याय, अत्याचार का अंत करना है। मैं इस राज्य में रहकर ये सब नहीं मिटा सकता, सब जगह जाकर अहिंसा का पाठ नहीं पढ़ा सकता, मैं अपने आचरण से ही प्राणी मात्र के अंदर प्रेम, वात्सल्य का भाव जगा सकता हूँ। समता की साधना और अहिंसा के बल पर सारे विश्व में शांति स्थापित कर सकता हूँ।

युवराज महावीर ने दीक्षा लेने का दृढ़ निश्चय कर लिया। दीक्षा लेकर वे ऐसे कठोर स्थानों पर गये जहाँ प्रभु की आवश्यकता थी। कभी भी भगवान ने किसी को अपने वश में करने के लिये कोई शस्त्र नहीं उठाया। और नाही सबको वश में करने के लिये वस्त्रों का त्याग किया। किन्तु जहाँ–जहाँ भी महाश्रमण महावीर विहार करते उनकी शांत मुद्रा देखकर सब स्वयमेव शांत हो जाते, अपनी क्रूरता छोड़ देते थे। इंसान ही नहीं क्रूर हिंसक तिर्यंच भी अहिंसक दयालु बन जाते थे। तीर्थंकर भगवान का जो वात्सल्य वलय रहता है उसी से सब प्राणी अपनी क्रूरता को छोड़ देते हैं। शत्रु के साथ भी मित्र जैसा व्यवहार करने लगते हैं। आपस में मिल–जुल कर भगवान की भक्ति करने लग जाते हैं। मन की मलिनता दूर कर लेते हैं। क्रूर पशु अपनी क्रूरता को छोड़ देते हैं। मनुष्य से भी पशु कभी–कभी महान् बन जाते हैं। महाश्रमण महावीर की कठोर साधना से हर प्राणी अवगत हो रहे थे। फिर भी महाश्रमण महावीर जैसे सज्जन व्यक्ति बिना कारण किसी दुर्जन को समझाने की चेष्टा नहीं करते थे।

सज्जन भी कभी–कभी अपने पूर्व पाप के उदय से सद्भावना को छोड़ देते थे। दुर्भावना के वशीभूत होकर नहीं करने योग्य कार्य कर देते हैं। उस समय यह विचार उनके मन में नहीं आता है कि जो कार्य करने जा रहा हूँ, इसका परिणाम क्या होगा ? उसका फल मुझे भोगना पड़ेगा या सामने वाले को, इसका फल अच्छा होगा या बुरा यह विचार नहीं आता है। अगर कोई विचार पूर्वक गहराई से दो मिनट सोच ले तो कोई किसी जीव को कभी कोई कष्ट ही ना दे। किसी महापुरुष पे कोई भी उपसर्ग ही ना करें, ऐसे समय में मनुष्य की बुद्धि सो जाती है, पाप रूप क्रिया में बुद्धि जाग जाती है।

कहते है–''बुद्धि कर्मानुसारिणी'' जीव राग के कारण भी दूसरों को कष्ट देता है और द्वेष के कारण भी कष्ट देता है। दोनों में अगर समत्व धारण करले, अपने विचारों में परिवर्तन करले तो कदाचित् सामने वाला बच सकता है।

कुछ होता है तो हम भी कहते हैं कि कर्म का उदय था, ऐसा ही कर्म बाँधा था इसलिये इसे ऐसा फल मिला। अनेक उदाहरण प्रथमानुयोग ग्रंथ में हमें मिलते हैं। जब चंदनबाला झूले में झूल रही थी तब उसने कौनसा कर्म किया था ?

आचार्य कहते हैं किसी भी जीव को सुख या दुःख जो भी मिलता है वह सब उसके द्वारा पूर्व भव में किये हुये कर्मों के कारण ही मिलता है। कोई किसी को बिना कारण कष्ट नहीं दे सकता, कोई भी अच्छा या बुरा कर रहा है तो उसके साथ जीव का कुछ न कुछ संबंध होगा। उसी से सुख–दुःख मिलता है।

चंदनबाला को सुख मिला तो क्यों मिला और दुःख मिला तो क्यों मिला ? उसके जीवन चारित्र को पढ़ने से पता चलता है। ऐसी महासती जो राजकुमारी होने के बाद भी दासी बनकर रही ऐसा उल्लेख हमारे जैनाचार्यों ने पुराणों के अंदर किया है। उन्हीं पुराणों के आधार पर संक्षिप्त में चंदनबाला का चारित्र मैं लिख रही हूँ।

इस भरत क्षेत्र में एक **वैशाली नगर** था। यह नगर बड़ा ही सुन्दर था। चारो ओर इस नगर में हरियाली ही हरियाली थी। चारों ओर से यह नगर विशाल कोट से सुरक्षित था। कोई भी शत्रु अचानक इस राज्य पर हमला नहीं कर सकता था। सर्वत्र सुख–शांति का वातावरण था। यह वैशाली नगर गणराज्य के नाम से जाना जाता था। यहाँ की प्रजा हमेशा प्रेम, वात्सल्य से मिल–जुलकर रहती थी। वहाँ के राजा का नाम **'चेटक'** था। उनकी प्रिय पट्टरानी थी **'सुभद्रा'**। महाराज चेटक बड़े ही न्यायवान और धर्मात्मा थे। ये अपनी संतानों से बढ़कर प्रजा से प्रेम करते थे और प्रजा को भी महाराज चेटक से उतना ही प्रेम था। उनकी एक आवाज पर सारी प्रजा खड़ी हो जाती थी। उनके आदेश का पालन करने में सदा तत्पर रहती थी।

महाराज चेटक के 10 (दस) पुत्र और 7 पुत्रियाँ थी। सभी बच्चों को माता-पिता ने धर्म के अच्छे संस्कार दिये थे, उनके अच्छे संस्कारों के कारण उनकी सबसे बड़ी पुत्री प्रियकारिणी (त्रिशला) अंतिम तीर्थंकर महावीर भगवान की माता बनी। सबसे छोटी पुत्री **चन्दना** महावीर भगवान की प्रमुख गणिनी बनी।

एक थी चेलना जिसने अपने मिथ्यात्वी पति महाराज श्रेणिक को धर्म का उपदेश दिया, जिनधर्म का अनुयायी बनाया, आनेवाली चौबीसी के प्रथम तीर्थंकर बनाने का पुण्य कमाया। महावीर भगवान के समवशरण में प्रमुख श्रोता बनने का सौभाग्य दिलाया। सभी पुत्रियाँ एक से बढ़कर एक थी, वे सब इतिहास में अजर-अमर हो गई। सब ने कुछ-न-कुछ विशेष कार्य करके दिखाया।

राजा-रानी अपने आप में संतुष्ट थे। अपने परिवार के साथ आनंद से राज्य कर रहे थे। लेकिन कभी भी संसार में कितना ही पुण्यात्मा जीव क्यों ना हो ? उनका भी हमेशा एक जैसा पुण्य नहीं रहता है। सुख-दुःख, पुण्य-पाप का क्रम चलता ही रहता है। हमेशा एक जैसे दिन किसी के भी नसीब में नहीं होते हैं, देखा जाता है जब अधिक खुशी मिलती है तब कुछ पल के बाद में ही दुःख का पहाड़ टूट पड़ता है। कभी-कभी तो जिसकी कल्पना भी नहीं की हो ऐसा अकस्मात् दुःख आ जाता है। जहाँ ज्यादा हँसी-खुशी का माहौल होता है वही ज्यादा रोना पड़ता है।

महाराज चेटक को प्रजा से, किसी शत्रु से और परिवार के किसी भी सदस्य से किसी प्रकार का दुःख नहीं था। उनकी प्रजा हमेशा उनकी आज्ञा को पालन करने में तत्पर रहती थी। पुत्र-पुत्रियाँ पिता के बताये मार्ग पर चल रहे थे।

पर किसी को किसी के सुख को देखकर ईर्ष्या होती है। वही हाल उस राज्य का हुआ। अचानक उस नगर पर किसी की बुरी नजर पड़ी।

एक दिन महाराज चेटक की सबसे छोटी लाड़ली बेटी राजकुमारी चंदनबाला अपने परिवार के साथ अशोक वन में महल के पीछे उद्यान में झूला झूलने गई। सखियाँ पुष्प चुनने लगीं और चन्दना अकेली झूला झूलने लगी। चंदनबाला को बड़ा आनंद आ रहा था। ठण्डी–ठण्डी हवा चल रही थी, वह मन में सोच रही थी आज कितना अच्छा लग रहा है। आज तो मैं जी भरके झूला झूलूँगी।

आज का मौसम कुछ बड़ा ही सुहाना लग रहा है। तभी मनोवेग विद्याधर ने उसका सहसा अपहरण कर लिया। इस अकस्मात् विपत्ति को देख चंदनबाला रोने लगी, उसकी आवाज उसके माता–पिता के कानों तक नहीं पहुँची। उसने भाइयों को पुकारा, सखियों को पुकारा। पर किसी ने चंदना की आवाज नहीं सुनी। विद्याधर ने जब पकड़ा तब से वह रोने–चिखने, चिल्लाने लगी– छोड़ दो मुझे, मुझे मत पकड़ो, मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा ? विद्याधर को अपने हाथों से पीटने लगी। कभी रोती, कभी कटु वचन बोलती– मुझे नीचे उतारो, मैं तुम्हारे आगे हाथ जोड़ती हूँ। मुझे छोड़ दो, मेरे पिता के पास जाने दो। कायर, दुष्ट, पापी, अधर्मी कहीं के, कभी सुख नहीं पायेगा, तुझे कभी मुक्ति नहीं मिलेगी। बचाओ, बचाओ....

अरे दुष्ट तुझे पता नहीं, सीता माता का रावण ने हरण किया था। एक स्त्री के कारण उसका वंश समाप्त हो गया। मरकर वह नरक में गया। छोड़ दे मुझे। हे माँ कहाँ हो तुम ? ये दुष्ट पुरुष मुझे पकड़ कर ले जा रहा है। जब कर्म का तीव्र उदय होता है तब रक्षा करने वाले भी दूर चले जाते हैं। किसी को भी चंदनबाला की आवाज सुनाई नहीं पड़ी और चन्दना मूर्च्छित हो गयी।

महारानी सुभद्रा चंदना को महल में ढूँढ़ रही थी। सारी सखियाँ वहाँ पर ही दिखी तो महारानी जी ने पूछा– तुम सब यही हो, चंदना भी तो तुम्हारे साथ गई थी, फिर चंदना कहाँ है? वो तो अकेली कही रहती नहीं है। बहुत देर से वो कहीं दिख भी नहीं रही है। देखो, चंदना कहाँ है ?

सखियाँ बोली– वो झूला झूल रही थी, हम तो फूल तोड़ने में व्यस्त हो गई। हम सब जब यहाँ आ रहे थे तो हमें वो नहीं दिखी, हमें लगा कि राजकुमारी जी महल में आ गई है। हम अभी फिर से देखकर आते हैं। सखियाँ उद्यान में खोजने गयीं। जहाँ–जहाँ वो क्रीड़ा करती थी, हर जगह सभी सखियों ने उसे जोर–जोर से आवाज दी परन्तु कहीं भी जब उनको चंदना नहीं मिली तब सखियाँ महारानी जी के पास आईं। कहने लगी– महारानी जी हमने पूरे अन्तःपुर को देख लिया है। कहीं भी राजकुमारी जी नहीं दिखाई दी। उद्यान, मंदिर, वाटिका आदि में भी हम देखकर आईं हैं, कहीं भी उनका कुछ सुराग नहीं दिखा।

महारानी ने पूछा– तुम लोगों ने अच्छे से देखा है, जाकर महाराज को सूचित करो। वो आज तक महल से बाहर नहीं गई है। मेरी बेटी कहाँ जा सकती है ? महारानी सुभद्रा जोर–जोर से रोने लगी। बेटी, तू कहाँ है ? कुछ तो जवाब दे। कहीं छिपकर तो नहीं बैठी है; परन्तु वो छिपेगी क्यों ? बेटी चंदना अपनी माँ को मत रूला, ऐसी मजाक मत कर, आजा बेटी मेरे पास आजा। कहीं कोई उसे उठाकर तो नहीं ले गया ? हमारा तो कोई शत्रु भी नहीं है। मेरी बेटी के साथ ऐसा काम कौन कर सकता है।

सब सेविकायें महारानी को समझाने लगी– रानी माँ ! आप मत रोइये, अभी महाराज आ रहे हैं। वो जरूर राजकुमारी को खोज लायेंगे। महाराज यहीं आ रहे हैं। महाराज को देखते ही महारानी और जोर–जोर से रोने लगी।

स्वामी ! मेरी चंदना, हमारी बेटी चंदना कहाँ है ? मैं उसके बिना नहीं रह सकती। मेरी चंदना ला दो। महारानी का रोना देखकर, महाराज भी रोने लगे। सारी दासियाँ और सखियाँ रोने भी लगी। प्रधानमंत्री ने महाराज को सान्त्वना दी, महाराज धैर्य रखिये। अभी मैं सारे सैनिकों को आपकी आज्ञा से चारों दिशा में भेजता हूँ और राजकुमारी जी को जो कोई जहाँ भी लेकर गया है, उसको पकड़वाता हूँ। हमारी राजकुमारी को कुछ नहीं होगा।

महाराज ! आप महारानी को सम्भालिये, थोड़ा धीरज रखिये। जो भी मित्र राजा हैं, उनको भी ये संदेश भेज देते हैं ताकि वो लोग भी हमारी मदद कर सकें।

महाराज ने कहा– आपको जो भी उचित लगे वो कीजिये। बस, मुझे मेरी प्राणों से प्यारी पुत्री चंदना चाहिये। पूरे वैशाली गणराज्य में कोहराम मच गया।

उधर मनोवेग विद्याधर जब अपनी पत्नी को छोड़कर आ गया तो उसकी पत्नी को पति पर शंका हो गई। वह आलोकिनी विद्या से उसकी सारी करतूत देखकर चुपचाप पति का पीछा करती हुई आ रही थी। एक बार मनोवेग ने पीछे मुड़कर देखा, उसे उसकी विद्याधरनी पीछे आती हुई दिखाई दी, उसने पत्नी के डर से चंदनबाला को पर्णलघ्वी (पत्ते के समान हल्का करने वाली विद्या) विद्या पर बिठाकर बियावान जंगल में उतार दिया। उसने यह नहीं सोचा इस कुमारी का क्या होगा ? कौन इसकी रक्षा करेगा ? यह कहाँ जायेगी? जिसको अपना बनाने के लिये हरण करके ले जा रहा था। उसका वही राग पत्नी को देखकर भय में परिवर्तित हो गया और उसने उसकी परवाह किये बिना ही अकेली मरने के लिये छोड़ दिया। ये मरे या जिये, चंदना को भाग्य–भरोसे जंगल में उतार दिया और वहाँ से भाग गया। उसकी पत्नी कुछ देख पाये उसके पहले ही वह वहाँ से पलायन कर गया।

चंदनबाला पर्णलघ्वी विद्या के सहारे धीरे–धीरे नीचे वन में गिरती गयी जब होश आया तो वह कोमलांगी उस भयानक जंगल को देखकर करुण विलाप करने लगी। रो–रोकर कहने लगी– अरे दुष्ट, पापी, नराधम तूने मुझे कहाँ छोड़ दिया है। अब मैं अपने माता–पिता के पास कैसे जाऊँगी ? उन्हें कौन बतायेगा ? माँ ! तुम कहाँ हो ? पिताजी, भैय्या, आप सब क्यों नहीं आ रहे हैं ? रो–रोकर चंदनबाला मूर्च्छित हो गई, गिर पड़ी।

वहाँ तो कोई उसके ऊपर ठण्डे पानी के छींटे देने वाला भी नहीं था। ठण्डी हवा से उसकी मूर्छा दूर हुई। वह उठी, इधर–उधर देखती माता–पिता को बार–बार पुकार रही थी। जब वह रोती तो वहाँ के पशु–पक्षी भी उसके साथ रोने लगते। अब मैं कहाँ जाऊँ ? कहीं से कोई रास्ता भी दिखाई नहीं दे रहा है। पीने को पानी भी नहीं दिख रहा है। भोजन तो दूर, इस जंगल में तो पशु–पक्षी ही दिख रहे हैं। मैं अपने राज्य से कितनी दूर हूँ ? अब तो मुझे माता–पिता भी ढूँढ़ रहे होंगे। सैनिक भी खोज रहे होंगे ? कौन बतायेगा उन्हें ?

शाम होने आई है इस पेड़ के नीचे ही आज रात बितानी पड़ेगी। अब तो रात होने वाली है। क्रूर पशुओं को मैंने आज तक नहीं देखा। अब तो इन्हीं के बीच में रात–दिन बिताना है। ये क्रूर पशु ही मुझे मार डालेंगे। कैसी–कैसी भयानक डरावनी आवाज आ रही है। ये शेर की आवाज, ये व्याघ्र की गर्जना तो मुझे एक पल भी बैठने नहीं देगी। अब तो मुझे भगवान का ही सहारा है, वो ही मुझे बचायेंगे। उनका नाम मंत्र ही मुझे कोई रास्ता दिखायेगा। हे प्रभु ! मैंने ऐसा कौन सा पाप किया जिसके कारण आज मुझे माता–पिता से दूर होना पड़ा। मैंने किसी न किसी भव में किसी बच्चे को उसके माता–पिता से अलग किया होगा। वही कर्म आज मेरे उदय में आया है।

अब रोने से तो कर्मों का बंध होगा। यहाँ कोई मेरी आवाज सुनने वाला नहीं है। अब मैं णमोकार मंत्र का पाठ कर लेती हूँ। मंत्र सुनकर ये क्रूर जानवर भी शांत हो जायेंगे। मंत्र के प्रभाव से पापी से पापी जीव भी अपनी क्रूरता छोड़ देता है। यह महामंत्र ही मुझे सभी दुःखों से छुड़ायेगा। मुझे मेरे भगवान के दर्शन करायेगा। हे प्रभु ! मेरे स्वामी ! मेरे भाग्य विधाता मुझे आप बचाओगे। मेरा प्रणाम स्वीकार करो प्रभु !

आँख बन्द करके चंदनबाला जोर–जोर से णमोकार मंत्र का उच्चारण करने लगी। **णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं, णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्व साहूणं।** मंत्र की ध्वनि पूरे जंगल में गूँज रही थी।

उसी समय एक भील वहाँ से जा रहा था, उसके कान में जब मंत्र की ध्वनि सुनाई पड़ी तो वह भी वहीं रुक गया, सोचने लगा– इतनी रात में ये कैसी आवाज आ रही है। मैं तो रोज इसी रास्ते से आता–जाता हूँ। आज तक किसी भी रात्रि में आवाज नहीं सुनी। वो कोई स्त्री कुछ बोल रही है। अकेली इतनी रात में यहाँ यह स्त्री आई कैसे ? पास जाकर देखना चाहिये। अरी ओ देवी ! इतनी रात में यहाँ क्या कर रहीं हो ? कौन हो तुम ? आँखें खोलो, तुमको कुछ सुनाई नहीं पड़ता क्या ? कौन लाया तुमको यहाँ ? आँखे खोलो और मेरी बात का जवाब दो।

चंदनबाला ने अपनी आँखें खोली, एक नजर उस कालक भील पर डाली और चुपचाप मन ही मन मंत्र जाप करने लगी।

कालक बोला– डरो मत, मैं इसी जंगल में रहता हूँ। तुम मुझे अपनी व्यथा बताओगी तो शायद मैं तुम्हारी मदद कर दूँगा। मेरा नाम 'कालक' है, अब तुम अपना नाम बताओ। तुम्हारे माता–पिता कौन हैं ? तुम्हारी जन्म–भूमि कहाँ है ?

चंदनबाला बोली– भाई मैं कर्मों की मारी हूँ, फिर भी तुम पूछ रहे हो तो मैं अपनी दुःखभरी कहानी कहती हूँ। चंदनबाला ने हरण से लेकर छोड़ने तक की कथा सुना दी।

कालक भील को सुनकर बड़ा दुःख हुआ, वह दुःखी होकर बोला– सुन्दरी, तुम्हारी दुःखभरी कहानी सुनकर मुझे बड़ा दुःख हो रहा है। अब तुम मेरे साथ मेरी झोपड़ी में चलो, यहीं पास में ही है।

मैं तुमको विश्वास दिलाता हूँ, मैं तुम्हारे साथ धोखा नहीं करूँगा, मैं तुमको तुम्हारे माता–पिता के पास पहुँचा दूँगा। यहाँ जंगल में ये हिंसक जानवर घूम रहे हैं। ये तुम्हें मारकर खा जायेंगे। विश्वास करो सुन्दरी, रात बढ़ती जा रही है।

चंदनबाला विचार करने लगी– अनजान व्यक्ति है, क्या करूँ इसके साथ मुझे जाना चाहिये या नहीं ? यह बोल तो अच्छा रहा है, ये मुझे मेरे माता–पिता तक पहुँचा देगा। फिर एक बार और पूछ लेती हूँ। तुम्हारे साथ चलने के लिये मैं तैयार हूँ। कल सूर्य उदय होते ही तुम मुझे मेरी जन्म भूमि पर पहुँचाने चलोगे।

कालक बोला– हाँ–हाँ सुन्दरी ! विश्वास करो, अब चलो।

चंदनबाला उसके मन के पाप को समझ नहीं पा रही थी। दुनियादारी से अनभिज्ञ, अनजान चंदना कालक की झोपड़ी के बाहर जाकर खड़ी हो गई। चंदना सोचने लगी– इसकी झोपड़ी में तो कोई भी नहीं। मैं अकेली कैसे रात बिताऊँगी ? यहाँ मेरी कौन सुरक्षा करेगा ? अंदर जाऊँ या बाहर ही रातभर बैठ जाऊँ। हे प्रभु ! मैं कैसी जगह आकर फँसी हूँ। एक तरफ खाई है तो दूसरी तरफ कुआ है। अगर मेरे साथ कुछ किया तो कोई सहायता के लिये भी नहीं आयेगा। दूर–दूर तक कुछ दिखाई भी नहीं दे रहा है।

इतने में कालक ने आवाज दी– आओ सुन्दरी ! अन्दर आ जाओ, इसे अपनी ही झोपड़ी समझो। अन्दर मैंने उजाला भी कर दिया है। जब चंदनबाला कुछ भी नहीं बोली तो वह बाहर आकर बोला– डरो मत, अन्दर चलो। तुम अन्दर चलकर विश्राम करो। मैंने सारी व्यवस्था कर दी है। पीछे तुम विश्राम कर लेना मैं बाहर कर लूँगा। यहाँ तुम्हें कोई नहीं डरायेगा। तुम निसंकोच अन्दर चलो। बहुत रात हो गई है अब विश्राम का समय हो गया है। डरने की कोई आवश्यकता नहीं है।

डरती–डरती चंदनबाला उसकी झोपड़ी के अन्दर गई। उस कालक ने जब प्रकाश में उसके सुन्दर रूप को देखा तो वह देखता ही रह गया। भगवान तूने भी क्या रूप बनाया है, आज मेरी किस्मत चमक गई। मैं भील आदिवासी काला–कलूटा, ये महलों की रानी, अब तो इसे झोपड़ी की रानी बनाऊँगा। अब इसे छोड़ने नहीं जाऊँगा। किस्मत वालों को ऐसी सुन्दर स्त्री मिलती है। मुझे भी ये मिली है। आज ही इसके सामने अपने दिल (मन) की बात रख देता हूँ। वैसे भी तो ये अकेली है और आदमी के सामने क्या कर सकती है ? और ये तो बहुत डरपोक है। इससे शादी कर लूँगा।

अरे सुन्दरी ! तुम यहाँ क्यों खड़ी हो ? ये खाट तुम्हारे लिये लगाई है। आओ, आज रात का विश्राम इसी पर करो। मैं बाहर बैठता हूँ। मैं जानता हूँ, तुम महल में रहने वाली हो, इस खाट पर तुम्हें नींद नहीं आयेगी पर आज की रात तो तुम्हें इसी पर निकालनी होगी। मैं रहा जंगल में रहने वाला प्राणी, मुझ जैसे गरीब की झोपड़ी में तो यही मिलेगी। मखमली बिस्तर तो हम गरीबों की किस्मत में नहीं है। चंदनबाला चुपचाप उसकी बात सुनती रही, वह धीरे से जाकर खाट पर बैठ गई। कालक भी उसके सामने बैठ गया। मैं जानता हूँ तुम अनजान स्थान में आ गई हो, इसलिये कुछ बोल नहीं रही हो, तुम्हें यहाँ आकर अब कैसा लग रहा है। चंदनबाला ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। वह नीचा मुँह करके बैठी रही।

कालक बोला– तुम्हारे आने से मेरी झोपड़ी में प्रकाश ही प्रकाश हो गया है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे साक्षात् आज स्वर्ग की देवी ही मेरी झोपड़ी में आ गई है। तुम्हें देखकर मुझे अन्दर से बहुत आनंद आ रहा है। यह आनंद बढ़ा दो सुन्दरी, अब तुम मुझे अपना पति बना लो, मुझ से शादी करलो, तुम यहाँ सुख से रहना, मैं सारा काम करूँगा, यहाँ तुम्हें कभी कोई परेशान नहीं करेगा। अब तुम मुझे स्वीकार करलो। इतना बोलकर वह अपने स्थान से उठकर चंदनबाला के पास जाकर बैठ गया।

जैसे ही कालक चंदना के पास बैठा उसके बैठते ही चंदना खड़ी होकर उसे फटकारती हुई बोली– अरे दुष्ट ! दुरात्मा ! दुबुर्द्धि ! उठ यहाँ से। एक असहाय स्त्री को देखकर विश्वासघात करता है। तूने मेरे साथ विश्वासघात किया है। झूठ बोलने वाला पापी इंसान, मेरे माता–पिता के पास पहुँचाने का वचन देकर तुमने मुझे धोखा दिया है।

कालक बोला– तुम मुझे कुछ भी बोलो, तुम्हारे सुन्दर रूप ने मेरा मन जीत लिया है। तुम्हारा ये मासूम चेहरा मेरी आँखों में समा गया, अब तुमको मैं छोड़ने वाला नहीं हूँ और तुमको यहाँ कोई बचाने भी नहीं आयेगा। ये मेरा इलाका है। तुम चिल्लाओ, रोओ, चाहे कुछ भी करो, अब तुम मुझसे विवाह कर लो, इसी में तुम्हारा भला है। तुम अपने माता–पिता को भूल जाओ। मैं तो तुम्हारे माता–पिता को जानता भी नहीं हूँ और ना ही उनके पास तुम्हें छोड़ूँगा। तुमने मेरी बात नहीं मानी तो मुझे फिर अपना असली रूप दिखाना भी आता है। अभी तो मैं तुम से प्यार से बोल रहा हूँ। फिर तो बोलने का काम ही नहीं रहेगा। जल्दी से सोच लो, यहाँ बैठकर सोचो। आओ बैठ जाओ।

चंदनबाला बोली– मुझे छुआ तो जलकर राख हो जायेगा। अपना जीवन चाहता है तो चला जा, बाहर निकल यहाँ से।

कालक बोला– मेरी झोपड़ी से मुझे ही बाहर निकालेगी। मेरी बात मान ले फिर तू जिन्दगी भर राज करेगी। तू गुस्से में मुझे और भी सुन्दर लग रही है। गुस्सा करके क्यों अपना खून जला रही है, रहना तो तुझे यही हैं। अब मान जा वरना....

चंदनबाला बोली– वरना क्या कर लेगा ? मैं अपना शील बचाने के लिये अपने प्राण दे दूँगी, वहीं रुक जा दुष्ट ! आगे मत बढ़। इस तरह जब चंदनबाला गुस्से में कालक पर चिल्लाई तो वह थोड़ा डर गया। चंदना का डरावना रूप देखकर वहीं खड़ा रह गया।

चंदना ने कहा– लो तुम मेरे ये सब कीमती आभूषण ले लो, मुझे छोड़ दो।

कालक ने सब आभूषण उठा लिये, वह समझ गया यह स्त्री मेरे वश में नहीं होगी। इसे तो अब अपने राजा को भेंट कर देता हूँ। उनसे इसके बदले मुँहमाँगा इनाम ले लूँगा। इसके आभूषण तो मिल ही गये हैं। राजा से भी इनाम ले लूँगा। अब चुपचाप इसे बन्द करके बाहर सो जाता हूँ। ये रात में बाहर भी नहीं जा सकेगी। कालक ने चंदनबाला को बंद कर दिया और बाहर झोपड़ी में आकर सो गया।

प्रातःकाल होते ही चंदना को बोला– ऐ सुन्दरी ! चल उठ। अब मैं तुझे मेरे राजा के पास ले चलता हूँ। वो ही तेरा न्याय करेंगे।

चंदनबाला खड़ी हुई, मन में सोचने लगी– अब ये दुष्ट मुझे कहाँ ले जा रहा है, जब ये इतना दुष्ट है तो इसका स्वामी तो और भी दुष्ट स्वभाव का होगा। हे भगवान ! कहाँ फँस गई मैं। यहाँ का वातावरण ही कितना दूषित है। पापी लोगों के बीच में आ गई हूँ, मेरी रक्षा करो प्रभु ! चंदनबाला कालक के पीछे–पीछे जा रही थी, उस जंगल का राजा था 'सिंहराज' सिंह की तरह क्रूर दिखने वाला। उसका उठना–बैठना, बोलना, अशोभनीय था। सिंहराज भीलों (कबीलों) का स्वामी सरदार था।

कालक सिंहराज के दरबार में चंदना को लेकर पहुँचा। महाराज सिंहराज की जय हो, जय हो।

राजा ने भी कालक को देखकर प्रसन्नता व्यक्त की। आओ कालक, बहुत दिन बाद आये। सब ठीक तो है।

कालक ने कहा– महाराज, आप जैसे शक्तिशाली के होते हुये हमारा कोई बाल भी बाका नहीं कर सकता। मैं आपके लिये एक अनमोल भेट लाया हूँ। आप भी देखकर खुश हो जायेंगे।

सिंहराज– जरा दिखाओ अपनी अनमोल वस्तु।

कालक– अभी दिखाता हूँ– आओ सुन्दरी ! सामने आओ, ये हमारे महाराज सिंहराज हैं। अब तुम्हें इन्हीं के पास में रहना है।

सिंहराज ने जैसे ही चंदना को देखा तो वह देखता ही रहा, उसके चेहरे से उसकी नजर नहीं हटा पा रहा था।

कालक– महाराज कहाँ खो गये, ये आपके पास में ही रहेगी, इसे बाद में देखते रहना, पहले मेरी बात सुन लो। अब जो मैं माँगूगा वो मुझे देना पड़ेगा।

सिंहराज– अरे तुमने तो मुझे आज इतना खुश कर दिया है। आज तक किसी ने जो चीज मुझको नहीं दी है वो तुमने दी है। आज तुम जो माँगोगे उससे कुछ अधिक ही दूँगा, कम नहीं दूँगा।

कालक– वाह महाराज ! आपने तो मुझे खुश कर दिया। अब मुझे मेरा इनाम दे दीजिये। मैं चलता हूँ, आप इस हीरे का उपयोग कीजिये। मैं तो आपके लिये ही ये अनमोल हीरा लेकर आया हूँ। आप इसका भरपूर लाभ लें।

सिंहराज– लो ये रत्नों का हार, तुम भी मौज करो, आगे भी आते रहना।

चंदनबाला दोनों के बीच की वार्ता सुनती रही। एक ने छोड़ा दूसरे ने पकड़ा है। इतने में राजा ने पूछा– सुन्दरी ! तुम्हारा नाम क्या है ? चंदना ने कुछ भी जवाब नहीं दिया। कोई बात नहीं, चलो मैं तुम्हें अपना महल दिखा देता हूँ। ये सब दासी–दास तुम्हारी सेवा करेंगे। इस महल को अपना ही महल समझो। कैसा लगा महल ? कुछ तो बोलो, तुम्हारी सुन्दरता ने तो मेरा मन मोह लिया है। ये कक्ष तुम्हारे लिये है, तुम यहाँ निवास करो, ये सेविकायें तुम्हारी सेवा करने के लिये यहीं है। निःसंकोच अपना काम इनसे करवाना, यहाँ तुम्हें कोई कष्ट नहीं होगा। तुम लोग इस सुन्दरी का विशेष ध्यान रखना। इसे किसी प्रकार की तकलीफ ना हो, मैं वापस आता हूँ।

चंदनबाला को सिंहराज ने बहुत लालच दिया। अनेक दासियाँ उसकी सेवा में नियुक्त कर दी। दासियों ने भी चंदनबाला के सामने अपने राजा की बहुत प्रशंसा की, हम आपकी बहुत सेवा करेंगी।

चंदनबाला सबकी बातें सुनती रहीं। सिंहराज तो रात होने का इंतजार कर रहा था, कब रात हो और कब मैं उस सुन्दरी के पास में जाकर अपने दिल की बात बोलूँ ?

जैसे ही रात हुई वह तैयार होकर चंदनबाला के कक्ष में पहुँचा। अपने हाव–भाव दिखाने लगा। सुन्दरी ! तुम मुझसे शादी करलो और मेरी पट्टरानी बन जाओ। मेरे साथ संसार के सुखों का भोग करो। मेरे पास सब कुछ है, बस तुम्हारी ही कमी थी। वो अब तुम पूरी कर दो। ये धन–दौलत, राज्य, इतने सेवक ये सब तुम्हारे हैं। मैं भी तुम्हारा हूँ, तुम्हारी सेवा करने के लिये मैं भी तैयार हूँ। मैं भी जिन्दगी भर तुम्हारा दास बनकर रहूँगा।

सिंहराज बोलता–बोलता चंदना के पास चला गया। जैसे ही वह उसके पास बैठा, वह दूर जाकर खड़ी हो गई। अरे तुम इतनी दूर क्यों चली गई हो। आओ मेरे पास में आकर बैठो। अब तो तुमको यहीं रहना है। आज ही तो मैंने तुम्हारी मुँहमाँगी कीमत दी है। डरो नहीं, अभी मेरा किसी से विवाह नहीं हुआ है। तुमसे विवाह करके तुमको ही अपनी पट्टरानी बनाऊँगा। ये अपना कोमल हाथ दिखाना, राजा चंदनबाला का हाथ पकड़ने लगा। वह क्रोधित हुई उस राजा पर चिल्लाई– नराधम ! दूर हट जा, मेरे हाथ को हाथ मत लगाना, मुझे छूने की कोशिश की तो तू जिन्दा भी नहीं बचेगा। राजा तो प्रजा की रक्षा करता है। रक्षक होता है, भक्षण नहीं करता है।

सिंहराज बोला– प्रजा की रक्षा तो मैं कर ही रहा हूँ, तुम तो मेरी रानी हो, मैं तो तुम्हारा दास बनने को तैयार हूँ। बस एक बार मेरी बन जाओ, अपना पति बनाओ।

चंदनबाला ने कहा– अरे दुष्ट ! मुझे हाथ भी लगाया तो तेरे साथ–साथ तेरा ये राज्य भी जलकर राख हो जायेगा। कामी, व्यसनी व्यक्ति को कुछ भी नहीं दिखता है।

वह राजा बोला– तू कितना ही श्राप दे, गालियाँ दे, चिल्ला। तेरी आवाज यहाँ कोई नही सुनेगा। चंदनबाला को जबरदस्ती जब वह राजा पकड़ने लगा तो वह जोर से चिल्लाई। हे प्रभु ! बचाओ, मेरी रक्षा करो।

राजा की माँ ने जब आवाज सुनी तो वह सोचने लगी– किसी स्त्री की आवाज मेरे पुत्र के कक्ष से आ रही है। मुझे जाकर देखना चाहिये। ये किसी स्त्री को कष्ट दे रहा है। स्त्री विलाप क्यों कर रही है ?

राजा की माँ उसके कक्ष में जल्दी से आई और पुत्र का हाथ पकड़ लिया। वह समझाने लगी– हे पुत्र ! ये तू क्या कर रहा है ? किसी स्त्री को जबरदस्ती अपना बनाना तो पाप है। यह कोई सामान्य स्त्री नहीं है, इसे कष्ट दिया तो तेरा नामोनिशान ही मिट जायेगा। इसे छोड़ दे। मैं इससे भी सुन्दर–सुन्दर राजकुमारियों से तेरा विवाह करवा दूँगी। मेरे लाल, मेरे खातिर इस देवी को छोड़ दे। वरना हमारी कुलदेवी रुष्ट हो जायेगी और हम सबको भस्म कर देगी।

ठीक है माँ, तू इसे समझाकर तैयार कर। तेरे कारण मैं अभी इसे छोड़ रहा हूँ। मैं केवल इसी से विवाह करूँगा। तू इसे अपने पास में ही रखना।

अरे ओ सुन्दरी ! मैं तुझे छोड़ने वाला नहीं हूँ। आज तो तू बच गई, आगे नहीं बचेगी। माँ तू इसे अपने कक्ष में ले जा और इसे समझा कर तैयार करदे।

उसकी माँ के साथ चंदनबाला रहने लगी। एक औरत ही औरत के शील को बचा सकती है। वह राजा की माँ उसे हर रोज समझाती– मेरा पुत्र हठ कर रहा है। तुम उससे विवाह करलो। इस महल की राजरानी बन जाओ।

चंदना उसकी माँ को एक ही बात बोलती– मैं शील धर्म को कभी नहीं छोड़ूँगी, अपने प्राण दे दूँगी। तुम अपने पुत्र को समझाओ, मैं विवाह नहीं करूँगी। मुझे छोड़ दो, जाने दो, मेरे माता–पिता के पास पहुँचा दो। जब उसकी माँ ने चंदना को समझा कर देख लिया तब राजा से बोली– बेटा, यह सुन्दरी कभी तुमसे विवाह नहीं करेगी। तुम इसे जहाँ से लाये थे वहीं छोड़ आओ। मैंने उसे बहुत समझाया है परन्तु वह मानने को तैयार नहीं है। हम कब तक उसका बोझ उठायेंगे, कब तक उसकी सेवा करेंगे।

सिंहराज ने विचार किया मैंने जितना इसका मूल्य कालक को दिया है उतना ही मैं कमाऊँगा। ठीक है माँ, तू चिंता मतकर जल्दी इसे छोड़ दूँगा।

सिंहराज का एक मित्र कौशाम्बी में रहता था। उसका मित्रधर नाम था। वह दास–दासियों को खरीदता और बाजार में उनको अधिक मूल्य पर बेच देता था। सिंहराज ने उसको वहाँ बुलवा लिया। राजाज्ञा पाकर वह सिंहराज के यहाँ आया।

सिंहराज ने कहा– मित्र ! तुमको मैं बहुत सुन्दर कन्या देने वाला हूँ, इससे तुम्हारा व्यापार और भी बढ़ जायेगा। मैंने उसे बहुत समझाया पर वो कुछ भी बात मानने को तैयार नहीं है। अब तुम मुझे उसकी उचित कीमत दे दो और उससे अपना व्यापार करो। यहाँ से ले जाओ।

ये बाहर से जितनी सुन्दर है, अन्दर से उतनी ही कठोर है। मैं तो इसको हर तरह से लालच देकर थक गया। ये मान जाती तो मेरे महल की पट्टरानी बन जाती। इसके साथ विवाह करने की मेरी तीव्र इच्छा है पर ये हाँ तक नहीं करती है। इसलिये इसे मैं तुमको सौंप रहा हूँ। ये भी क्या याद रखेगी मुझे। इसको जो एक बार देख लेगा, वो इस पर मोहित हो जायेगा।

मित्रधर भी चंदना को देखने के लिये व्याकुल हो गया। अरे तुम केवल उसके रूप की प्रशंसा ही करोगे या दिखाओगे भी। मैं भी तो देखूँ वो ऐसी कौन–सी स्वर्ग की अप्सरा को मात कर रही है, पहले उसे बुलाओ, मुझे दिखाओ, मुझे वापस भी जाना है।

हाँ मित्र, अभी बुलाता हूँ। तुम स्वर्ण मुद्रायें निकालो, मैं उसे बुलाता हूँ। सिंहराज चंदना को अंदर से बाहर लेकर आया। मित्रधर ने जैसे ही उसे देखा वह भी देखता रह गया। वाकई क्या सुन्दरी है, तुमने मुझे यहाँ बुलाकर खुश कर दिया। लो ये स्वर्ण मुद्रायें, बिठाओ इसे रथ में। चलो सुन्दरी रथ में चढ़ो।

मित्रधर अपनी किस्मत पर खुशी मना रहा था। वह बुदबुदा रहा था– आज तक ऐसी सुन्दरी बाजार में नहीं ले गया था। आज सब लोग इसको देखकर खुश हो जायेंगे। इससे व्यापार भी बढ़ जायेगा। मुझे वर्षों हो गये इन मनुष्यों का व्यापार करते हुए पर आज तक इतनी सुन्दर स्त्री नहीं बेची। आज तो कीमत ही नहीं बतानी पड़ेगी लोग पहले ही खरीद लेंगे। आज तो जल्दी ही कौशाम्बी आ गया। इस सुन्दरी के विषय में सोचते–सोचते कब रास्ता पार हो गया, कुछ पता ही नहीं चला।

अरे ओ गाड़ीवान रथ यही रोक दो, मुझे यही उतरना है। चलो दासी नीचे उतरो, कौशाम्बी आ गया है। इस बाजार को अच्छे से देख लो, अभी तुम्हारी यहीं नीलामी होगी। जो तुम्हें खरीदेगा वहाँ तुमको जाना है। आज देखना है तेरी कीमत सबसे अधिक कौन लगाता है ? तू मुझे कितना माल दिलाकर जायेगी। चल आगे बढ़, इस चबूतरे पर चढ़, यहीं खड़ी हो जा, सब लोग तुझे ही देख रहे हैं। मुझे कुछ भी बोलने की जरूरत नहीं है। सबकी नजर तेरे पे लगी है। सबसे अच्छा माल तो मेरे पास ही है। तू सुन्दर है, जवान है, अनमोल हीरा है।

चंदनबाला ने जैसे ही कौशाम्बी का नाम सुना तो सोचने लगी– मेरी बहन मृगावती तो यहाँ की महारानी है, उसे कोई बतादे। मैं किसको उसके पास भेजूँ ? दीदी, तेरे राज्य में मेरे साथ कैसा अत्याचार हो रहा है ? तुम्हारे राज्य में इंसान को नीलाम किया जाता है, बाजार में बेचा जाता है। दीदी मुझे बचाने आओ। राजकुमारी से दासी बन गई हूँ। क्या मेरा दुर्भाग्य है, कैसी मेरी किस्मत है ? कर्मो की बड़ी विचित्रता है। मेरी सभी बहिनें सुख और आनंद में है। मैं उन सबकी लाड़ली होकर भी आज दर–दर की ठोकरें खा रही हूँ। सबसे बड़ी बहन देवों से पूजी जा रही है और मैं संसार के पापी लोगों से खरीदी जा रही हूँ।

कर्मों के आगे बड़े–बड़े महापुरुष भी हार गये हैं। कर्म बड़े बलवान हैं, कर्म तीर्थंकर भगवान को भी नहीं छोड़ते हैं। फिर मैं तो कुछ भी नहीं हूँ। हे प्रभु ! आप तो प्राणीमात्र की रक्षा करने के लिये मुनि बने हैं। हे नाथ! मेरी भी रक्षा करो। हे दयानिधान ! मुझे पापियों के चंगुल से छुड़ाओ। इस धरती पर छठे पद्मप्रभु भगवान ने जन्म लिया। हे प्रभु ! मेरा भी कल्याण करो। मैंने जो भी पाप किये हो, वो सब पाप नष्ट हो।

चंदनबाला अपने कर्मों का चिंतवन कर रही थी। मन ही मन प्रभु को पुकार रही थी। नीची दृष्टि करके वह सबके बीच चौराहे पर खड़ी थी।

महावीर भगवान के समय प्रजा पर और उसमें भी स्त्रियों पर अन्याय अत्याचार बहुत बढ़ गया था। स्त्रियों का अपहरण करना, उनको बेच देना, गलत काम करना, दुष्कर्म करना, राजकुमारियों को दासी बनाकर रखना, स्त्री जाति को दबाना, उनका शोषण करना, हर तरफ से दबाव डालना, इज्जत का सौदा करना। न्यायपालक शासकों के होते हुए भी ऐसे अत्याचार होते थे फिर भी राजा लोग आँखों पर पट्टी बाँधे अपना राज्य संचालन करते थे।

प्रजा के साथ कहाँ, क्या हो रहा है वो सब राजा लोग नहीं देखते थे। राजगद्दी और राज सिंहासन पर बैठकर केवल अपना स्वार्थ सिद्ध करना, विषयों में डूबे रहना, ये राजा का कार्य नहीं है। जिस राजा के राज्य में पाप होता है वह राजा भी उस पाप का भागीदार होता है। जिस राज्य में पुण्य क्रियायें होती हैं, धार्मिक अनुष्ठान होते हैं, गुरुओं की सेवा, वैय्यावृत्ति, भक्ति आदि होती है उस पुण्य का छट मांश अधिकारी वहाँ का शासक भी होता है। पाप की जो अनुमोदना भी नहीं करता है तो भी वह कृतकारित के समान पाप का भागीदार होता है।

जो व्यापार नहीं करना चाहिये और राजा उस पर रोक नहीं लगाता है तो वह राजा उसका फल भोगता है। राजा प्रजा का पुत्र की भाँति पालन–पोषण करता है। उसे पूरे राज्य का निरीक्षण परीक्षण स्वयं अपनी आँखों से करना चाहिये। मेरे राज्य में कहाँ पर क्या हो रहा है, सारी जानकारी होना चाहिये। केवल नाम के राजा बनकर सिंहासन पर बैठकर भोग–विलासिता में नहीं डूबना चाहिये।

उस समय कौशाम्बी का राजा शतानीक एवं उसकी रानी मृगावती थी जो कि चंदनबाला की तीसरे नं. की बहन थी। ऐसे राजा के होते हुये भी वहाँ पर अच्छे–अच्छे कुल के राजकुमार–राजकुमारियों को कौशाम्बी में भरे चौराहे पर नीलाम कर दिया जा रहा था।

राजा शतानीक के पास अधिकार होने के बाद भी वहाँ पर स्त्रियाँ सुरक्षित नहीं थी। खाद्य सामग्री का व्यापार होता है। सोने–चाँदी के आभूषण आदि का व्यापार होता है। तन ढ़कने के लिए वस्त्रों का व्यापार होता है। लोग दुकान खोलकर नया व्यापार करते हैं, धन कमाते हैं पेट भरने के लिये। षट् कर्म करते हैं आजीविका के लिये।

षट्कर्मों में कहीं पर भगवान आदिनाथ ने इंसानों को बेचने का उपदेश नहीं दिया; परन्तु महावीर भगवान के समय हर एक राज्य में इतनी अराजकता असुरक्षा छा गई थी कि भरे बाजार में कोई मनुष्य मनुष्यों को बेच रहा है तो उसका कोई विरोधी दल नहीं था। स्वर्ण मुद्रायें देकर ही सामने वाली की सुरक्षा होती थी। बिना स्वर्ण मुद्रा दिये किसी व्यापारी से कोई भी किसी इंसान को मुक्त नहीं करवा सकते थे।

कोई पाप का व्यापार बंद करवाने वाला नहीं था। नीलामी होती तो लोगों की भीड़ जमा हो जाती थी। तुम जो व्यापार कर रहे हो, ये करने योग्य नहीं है ऐसा बोलने वाला कोई नहीं था। अभी कहीं–कहीं पर हाट बाजार लगा है। हाट बाजार में सब्जी, कपड़े, जानवर, खाने पीने का सामान आदि बिकते हैं। उसी तरह वह कौशाम्बी का बाजार इंसानों को बेचता था।

लोग शौक से स्वर्ण मुद्रायें देकर खरीदकर ले जाते थे। गंदे बाजार में लोग भी गंदे ही आते हैं, उनकी नजर भी गंदी रहती हैं। वे वचन भी असभ्य बोलते हैं। सज्जन व्यक्ति जिन वाक्यों का प्रयोग करना तो दूर सुनता भी नहीं है, ऐसे गंदे–गंदे शब्द उस बाजार में लोग बोल रहे थे। गंदी हंसी मजाक कर रहे थे।

चंदनबाला को देखकर नवयुवक पंक्तिबद्ध खड़े हो गये। वे मित्रधर से कह रहे थे– वाकई आज तो तुम क्या माल लेकर आये हो। आज तक ऐसी सुन्दर कन्या इस बाजार में कभी बिकने नहीं आई होगी। हम भी पहली बार ऐसी सर्वांग सुन्दरी देख रहे हैं। ये सबको आकर्षित कर रही है। आज बाजार तो इसी से चमक रहा है।

ऐ सुन्दरी ! एक बार मेरी तरफ देखले, क्या सुन्दरता पाई है तूने ? हम लोग इसे देख रहे हैं पर ये हैं कि किसी को आँख उठाकर भी नहीं देख रही है।

एक व्यापारी मित्रधर से बोला– अरे मित्रधर ! आज तो सारी स्वर्ण मुद्रायें तुम कमाकर ले जाओगे, सारे खरीदने वाले तुम्हारी दासी को देख रहे हैं। आज तुम्हारी दासी पूरे बाजार में हीरे की तरह चमक रही है। कहाँ से मिला तुम्हें इतना सुन्दर हीरा।

मित्रधर चंदना को देख–देखकर खुश हो रहा था। अरे ये दासी तुझे मालामाल कर देगी। हमको देखो रोज इन दास–दासियों को लेकर आते हैं। सुबह से शाम हो जाती है कोई इनको नहीं खरीदता है। तुम अभी बहुत सारा पैसा कमा लोगे। सारे जवानों की नजर इस पर ही टिकी है। ये जिसके यहाँ जायेगी उसको खुश कर देगी।

सभी व्यापारी मित्रधर से कहने लगे– आज तो तुम्हारी पाँचों उंगलियाँ घी में और सिर कड़ाई में है। कभी हमें भी ऐसा अवसर मिलेगा। चंदनबाला अपनी किस्मत को कोस रही थी। एक जगह से बचती हूँ फिर दूसरी जगह फस जाती हूँ। मैंने ऐसे कितने बुरे करम किये हैं और क्या–क्या खेल दिखायेंगे कर्म ? मैं कर्मों से हार गई हूँ। हे प्रभु ! आज तक आपने मेरे शील की रक्षा की है। आप ही आगे भी रक्षा करेंगे, मैंने जो भी ज्ञात–अज्ञात भाव से कर्मों का बंध किया हो वो सभी मिथ्या होवे। णमोकार मंत्र ही मेरी रक्षा करेगा। प्रभु वीर ही मुझे इन सब कष्टों से मुक्त करायेंगे।

चन्दना मन ही मन महाश्रमण महावीर को पुकार रही थी। हे प्रभु ! अब तो मैं ऐसे स्थान पर आ गई हूँ, पता नहीं कौन व्यक्ति मुझे खरीद कर ले जायेगा ? मेरे साथ और क्या–क्या होगा ? उसकी मैं कल्पना भी नहीं कर सकती। मेरी सेवा के लिये अनेक दासी–दास खड़े रहते थे, आज किस्मत से मैं ही दासी बन गई हूँ। अभी तक मुझे पिताजी भी खोजने नहीं आये, आयेंगे कैसे ? वो मुझे ढूँढ़ भी रहे होंगे तो उन्हें यहाँ का पता भी नहीं होगा। प्रभु मेरी रक्षा करो।

वहाँ जितने नवयुवक खड़े थे, सब उसको खरीदना चाह रहे थे। इतनी सुन्दर स्त्री देखने में तो कोई स्वर्ग की देवी लगती है। एक युवक बोला– आज तो इसे मैं खरीद कर ले जाऊँगा। दूसरा बोला– अच्छा तेरे पास कितनी स्वर्ण मुद्रा है? बड़ा आया खरीदने वाला, तेरे से ज्यादा स्वर्ण मुद्रायें मेरे पास हैं। आज इसे मैं खरीदूँगा। तीसरा बोला– अरे चुप रह, ये तो मेरे गले का हार बनेगी, मैं भी सुन्दर हूँ, वो भी सुन्दर है। हमारी उम्र भी समान है। चौथा कहने लगा– रहने को तेरे पास मकान तक नहीं है। क्यों सपने देखता है ? ये तो मेरे घर की शोभा बनेगी। मैंने तो जब से देखा तब से ही इसे अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर लिया है। उसकी बात काटते हुए एक युवक बोला– तुझे शर्म नहीं आती है। तेरी पत्नी है, बच्चे हैं और चला सुन्दरी को खरीदने। अरे अभी तो हम कुँवारे बैठे हैं, मैं इसे खरीदूँगा। एक युवक बोला– तुम लोग जब स्वर्ण मुद्रायें बढ़ाओगे तभी तो खरीदोगे तब तक पीछे हटो, इस परी को जी भरके मुझे देख लेने दो, बाद में देखने मिले भी या नहीं।

एक और युवक आगे बढ़ा और बोला– मैं इसे पलकों पे बिठाकर रखूँगा। उसकी बात का जवाब किसी अधेड़ उम्र के व्यक्ति ने दिया। तेरे रहने का तो ठिकाना नहीं है, क्या खिलायेगा, कहाँ रखेगा? क्या पहनायेगा ? मेरी पत्नी तो मर चुकी है इसलिये व्यापारी जो माँगेगा वो मैं दूँगा। इसे मैं अपने महल की रानी बनाऊँगा। नौजवान व बूढ़े सब चंदना को खरीदने के लिये तैयार थे। जब सब लोग इस तरह के अश्लील शब्दों का प्रयोग कर रहे थे।

तब चंदना सोचने लगी– इन अपशब्दों को सुनने से पहले मेरी मृत्यु क्यों नहीं हो गई। कितने गंदे–गंदे वाक्य मुझे सुनने को मिल रहे हैं ? मैंने भी किसी को ऐसे वचन बोले होंगे किसी सती–साध्वी पर कलंक लगाया होगा, उसके शील पर दोष लगाया होगा, किसी का दुष्प्रचार किया होगा वही कर्म आज मेरे उदय में आये हैं। **'णमो अरिहंताणं'** आदि बोलती हुई चंदना खड़ी थी।

इतने में सब ग्राहकों ने कहा– अरे व्यापारी कब तक खड़े रहोगे ? किसका इंतजार कर रहे हो ? इसे बेचने आये हो या हमें दिखाने लाये हो, नीलामी शुरू करो। इतने मैं एक युवक बोला– थोड़ी देर रुक जाओ, पहले मुझे जी भरके देख लेने दो। किसी ने कहा– देखने की इतनी इच्छा है तो खरीद के ले जा घर में फिर घर में जाकर देखते रहना। सबने एक स्वर में व्यापारी को कहा– अब शीघ्रता करो, नीलामी (बोली) शुरू करो। आज खरीदने वाले ज्यादा हैं, सुन्दरी एक है। ये किसके दिल की रानी बनेगी, आज तो इस अप्सरा ने सबका मन (दिल) जीत लिया है।

व्यापारी बोला– आप लोग अपनी तरफ से स्वर्ण मुद्रायें बढ़ाते जाइये, जिसकी सबसे अधिक मुद्रा होगी उसे यह सुन्दरी मिल जायेगी। बोलो– भाइयों, अपनी–अपनी स्वर्ण मुद्रा बोलो ?

एक ने बोला 5 स्वर्ण मुद्रा, दूसरे ने 10, किसी ने 25 बोली, किसी ने 50 बोली, किसी ने 100 बोली किसी ने 200 बोली, इस तरह स्वर्ण मुद्रायें बढ़ती जा रही थी। लोग बढ़ाते जा रहे थे।

मित्रधर आवाज दे रहा था– बोलो भाइयो बोलो, जो बढ़ाओगे वो हमेशा के लिये इस सुन्दरी को ले जाओगे। बढ़ाते जाओ।

जैसे–जैसे स्वर्ण मुद्रायें बढ़ रही थी, वैसे–वैसे चंदना की धड़कन बढ़ रही थी। हे प्रभु ! रक्षा करो। कहने लगी–

''भावना भवनाशिनी, भावना भव वर्धिनी।'

चंदना की प्रार्थना प्रभु ने सुन ली। उसी समय कौशाम्बी नगर के नगर सेठ वृषभदत्त उस चौराहे से कहीं जा रहे थे। उनकी नजर जब चंदना पर पड़ी तो उन्होंने अपना रथ वहीं रुकवाया। रथ से उतर कर आगे बढ़े। उन्होंने चंदना को देखा तो उन्हें लगा इस बिचारी को छुड़ाना चाहिये। ये इन लोगों के चंगुल में कैसे फस गई ? ये किसी उच्च कुल की कन्या होनी चाहिये।

यह लज्जा के कारण अपना चेहरा भी ऊपर नहीं कर रही है, डर रही है। कितना मासूम चेहरा है इसका। मेरे कोई संतान भी नहीं है, इसे स्वर्ण मुद्रायें देकर अपनी बेटी बनाकर ले जाता हूँ। ये भयभीत हिरणी की तरह किसी रक्षक की राह देख रही है। चिंता मतकर बेटी मैं तुझे ले जाऊँगा। किसी दुष्ट ने इसे खरीद लिया तो इसका जीवन बरबाद हो जायेगा।

बेचारी थर–थर काँप रही है, कर्म भी कैसे–कैसे खेल दिखता है ? सारे व्यसनी लोग खरीदने को तैयार खड़े हैं। कोई भी जवान इनमें सज्जन नहीं लग रहा है। कोई इसकी ओर अधिक स्वर्ण मुद्रायें लगाये उससे पहले मैं ही अब सबसे अधिक मुद्रा बढ़ा देता हूँ। आज पुण्य से शायद मैं यहाँ आया हूँ। एक पुण्य का काम हो जायेगा। इसके जीवन की सुरक्षा हो जायेगी, इसका शील बच जायेगा। मुझे पुत्री मिल जायेगी।

मित्रधर ने कहा– बोलो भाई और मुद्रायें बढ़ाओ। सेठ ने 5000 स्वर्ण मुद्रायें बढ़ा दी। उसके बढ़ाते ही सब लोग सेठ की तरफ देखकर कहने लगे– ये क्या ! ये बुड्ढा भी अब जवान बनने चला है। बाल सफेद हो गये हैं और लड़की को खरीद कर ले जा रहा है। अरे अपने बुढ़ापे पर तो तरस खा। अपने घर में बैठकर भगवान का नाम ले, इसकी उम्र की तो तेरे घर में बेटियाँ होंगी, इसे ले जाकर क्या करेगा ? हम सब तो अभी जवान हैं, इसे खरीद लेंगे, इसके साथ मौज–मस्ती करेंगे। तू यहाँ से चला जा, हमें खरीदने दे।

मित्रधर बोला और अधिक कोई बढ़ाना चाहता है तो बढ़ाये नहीं तो ये सुन्दरी सेठ को दे (बेच) रहा हूँ।

किसी ने सेठ से अधिक मुद्रा नहीं बढ़ाई। स्वर्ण मुद्रायें देकर वृषभदत्त सेठ ने चन्दना को खरीद लिया। गन्दे लोग, गन्दी बातें बोलते हुये चले गये। मित्रधर ने चंदना को सेठ के हाथों सौंप दिया।

सेठ के पीछे–पीछे चंदना धीरे–धीरे चलकर रथ के पास आकर खड़ी हो गई। चंदना मन में सोचने लगी– क्या करूँ, रथ में बैठूँ या कहीं भाग जाऊँ। ये वृद्ध पुरुष दिखने में तो सज्जन लगता है परन्तु मुझे कहाँ ले जा रहा है ? मेरे साथ क्या करेगा, इसने मुझे खरीदा है। क्यों खरीदा कुछ समझ में नहीं आ रहा है। भागकर कहाँ जाऊँगी मैं तो कोई रास्ता भी नहीं जानती। हे प्रभु ! रक्षा करना, अब तो हर मनुष्य से मुझे भय लगता है। जो भी अच्छा बोलकर साथ में ले जाता हैं वो ही बाद में धोखा देता हैं। अब मैं लोगों के चेहरे पहचान गई हूँ। सेठ तो रथ में चढ़ गये, चंदना नहीं चढ़ी तो सेठ उसका चेहरा देखकर सब समझ गया। आओ बेटी ! डरो मत, रथ में बैठो।

चंदनबाला ने 'बेटी' शब्द सुना तो फूट–फूटकर रोने लगी। आज इतने दिनों के बाद कोई बेटी बोलने वाला पिता मिला है। दुनिया में अभी सज्जन लोग भी हैं। आज तक जो भी मिले वो सब मुझे राक्षस, कामी, व्यसनी मिले थे। आज मेरे पुण्य से प्रभु ने मेरी रक्षा करने के लिये किसी पुण्यात्मा को भेजा है।

सेठ ने फिर से कहा– रोओ मत, तुम मुझे अपना पिता समझो, तुम्हारे दुःख के दिन भूल जाओ। मैं तुम्हारा दुःख समझ रहा हूँ। मुझ पर विश्वास करो, आओ रथ में बैठ जाओ। चंदना सेठ पर विश्वास करके रथ में बैठ गई। धीरे–धीरे रथ सेठ के महल के पास पहुँच गया। सेठ मन में बहुत प्रसन्न हो रहा था। आज मुझे मेरी बेटी मिल गई है। सेठानी भी आज बहुत खुश हो जायेगी। हमेशा बच्चों के लिये रोती रहती थी। आज से हम दोनों एक बेटी के माता–पिता हो गये हैं। अरे भाई रथ को यही रोक दो, आओ बेटी नीचे उतरो, ये देखो तुम्हारा घर आ गया है। आज से तुम इसे अपना ही घर समझना, तुम यहाँ रुको, मैं सेठानी को बुलाता हूँ।

सेठ ने सेठानी भद्रा को आवाज दी– अरी ओ भागवान् ! जल्दी नीचे आओ, देखो मैं तुम्हारे लिये क्या लाया हूँ ?

भद्रा बोली– क्या लाये हो स्वामी ? आज आप बहुत जल्दी आ गये। आज तो आप बड़े खुश नजर आ रहे हैं। क्या लाये हो मेरे लिये ? कोई खजाना मिल गया क्या ? मुझे कुछ दिखाई नहीं दे रहा है, आपके हाथ में भी कुछ नहीं है, क्या लाये आप ? जल्दी बताओ स्वामी ? सेठ– अभी देखोगी तो तुम भी खुश हो जायेगी।

चंदना सामने आओ। चंदनबाला बुलाने पर धीरे से सामने आई। सेठ ने कहा– भद्रा ! ये आज से हमारी बेटी है, मैं इसे अपनी बेटी बनाकर लाया हूँ। हम दोनों माता–पिता बन गये हैं। बेटी, ये तुम्हारी माँ है और मैं तुम्हारा पिता हूँ। चंदनबाला ने धर्म के माता–पिता के चरण छूकर प्रणाम किया। पिताजी ने आशीर्वाद दिया– सदा खुश रहो। परन्तु सेठानी ने जैसे ही चंदना को देखा तो उसके चेहरे की हँसी गुम हो गई, उदासी छा गई।

मन में सोचने लगी– ये तुमने अच्छा नहीं किया, मेरे कोई संतान नहीं है इसलिये तुम मेरे लिये सौत लाये हो। बाहर से बेटी बोल रहे हो परन्तु ये मेरे लिये एक सौतन लेकर आये हैं। देखती हूँ मैं ये कैसे यहाँ रहती है ? सेठ ने सेठानी को हिलाया– क्या सोचने लगी हो ? बेटी को आशीर्वाद दो। इसे अपने गले लगाओ। तब सेठानी ने ऊपरी मन से आशीर्वाद दिया– खुश रहो।

सेठ ने घर में जितनी दासियाँ थीं उन सबको आदेश दिया आज से ये तुम्हारी छोटी मालकिन हैं। इसे अपना कक्ष दिखाओ, सारी व्यवस्था करो। भद्रा चंदना को अच्छे वस्त्र आभूषण पहनाओ, इसके माता–पिता अब हम ही हैं। इसे किसी प्रकार की तकलीफ नहीं होना चाहिये। इसे भोजन आदि कराओ। बेटी आज से ये सब कुछ अपना समझना, कोई भी काम हो तो इन सेविकाओं से करवाना। सेठानी तो ईर्ष्या की आग में जलने लगी। सब दासियाँ चंदना के साथ बहुत आनंद से रहने लगी।

सेठानी भद्रा के मन में तो शंका ने अपना घर बना लिया था। जब से चंदना घर में आई उस दिन से उसकी आँखों की नींद कोसों दूर हो गई। उसका सुख–चैन नष्ट हो गया। दिन–रात एक ही बात सेठानी सोचती रहती– कब इसको घर से निकालूँ ?

जब से ये आई है, तब से मेरे पति मुझसे अच्छे से बात भी नहीं करते हैं। पहले तो घर में देर से आते थे, अब तो जल्दी ही आ जाते हैं। जब देखो चंदना के गुणगान करते रहते हैं। इस दुष्टा ने ऐसा क्या जादू कर डाला है। उन्हें इसके सिवा कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता है। ये मेरे पति को अपने वश में कर लेगी, उन पर अपना राज जमा लेगी, धीरे–धीरे ये सेठानी बन जायेगी। कहीं ये दोनों मिल कर मुझे घर से ना निकाल दे, इससे पहले मैं ही इसे निकाल दूँगी।

इतने साल मैं खुश थी, ये दुष्टा तो मीठा–मीठा बोलकर मेरे पति पर राज जमा रही है। मैं तो इनसे बात करने के लिये तरस जाती हूँ और ये इससे घंटों बाते करते रहते हैं। इसके सिवा कुछ दिखाई नहीं पड़ता, बुढ़ापे में ये क्या गुल खिलायेंगे। ये भी कौन से जनम का बदला लेने मेरे घर में आई है। इस प्रकार धीरे–धीरे सेठानी का क्रोध बढ़ने लगा– वो अपने आपको गालियाँ देती, आँखें लाल–लाल कर लेती, होठ भींचने लगती, जोर–जोर से पैर पटक कर चलती, किसी को अच्छी तरह से जवाब नहीं देती थी।

एक जीव के साथ एक राग करता है तो दूसरा द्वेष करता है। यह उसके कर्म के कारण सामने वाले के ऐसे परिणाम होते हैं। कुछ न कुछ पूर्व भव का संबंध होता है। सेठानी को तो एक ही चिंता थी, कब ऐसा शुभ दिन आयेगा जब मैं जी भरके इससे बदला लूँगी। इससे विपरीत चंदनबाला सेठ के यहाँ बहुत खुश थी।

वह सोचती थी– ये मेरे धरम पिता बनकर आये, इन्होंने मेरे ऊपर बहुत बड़ा उपकार किया है। मुझे अपनी संतान से बढ़कर प्यार दे रहे हैं। किसी न किसी भव में ये मेरे पिता अवश्य रहे होंगे इसलिये इस भव में धरम के पिता बनकर आ गये।

एक दिन सेठजी घर में जल्दी आ गये। वो दासियों को आवाज दे रहे थे। उनकी आवाज किसी ने नहीं सुनी, कोई नहीं आया तो चंदना एक हाथ में थाली और एक हाथ में जल से भरा कलश लेकर आ गई। कहने लगी–

पूज्य पिताजी आप यहाँ बैठिये, आज मैं अपने हाथों से आपके पैर धो देती हूँ। कोई भी दासी अभी यहाँ नहीं है इसलिये मैं ही पानी लेकर आ गई हूँ। अपने पैर इस थाली में रखिये। चंदना अपने हाथ से जब सेठ जी के पैर धो रही थी तभी उसकी केशराशि झुकने के बाद सेठ के पैरों में जा लगी। लम्बे काले घने बाल सेठ जी के चरणों में लग गये।

सेठजी ने बड़े प्यार से उसके बालों को अपने हाथों से उठाते हुए कहा– अरे बेटी ! इनका स्थान मेरे चरणों में नहीं है। ये तो तेरे सिर की शोभा है, ये सिर में ही अच्छे लगते हैं। ऐसा बोलकर उन्होंने चंदना के बाल सिर पर रख दिये। जब वो बाल उठा रहे थे तब ऊपर से सेठानी की नजर उस पर पड़ी। उसका शक पक्का हो गया वह विचार करने लगी–

अभी तक तो मैं सोचती थी, आज तो इन दोनों को मेरी आँखों ने देख लिया है। प्रमाण मिल गया है। अब मैं नहीं छोड़ूँगी तुझे, यहाँ नहीं रहने दूँगी। उसकी शंका अब पक्की हो गई। मेरे रहते हुए इस हवेली पर, मेरे पति पर अपना राज्य जमाना चाहती है।

सेठानी जल्दी–जल्दी से अपने कक्ष में चलने लगी। अब मैं माफ भी नहीं करूँगी। यहाँ रहने भी नहीं दूँगी। तूने मेरे जीवन में आग लगाई है। मैं भी तुझे इतना कष्ट दूँगी जो तू कभी सोच भी नहीं सकती।

एक बार मुझे मौका मिल जाये, जब ये मुझे अकेली मिलेगी और मैं इससे बदला ले लूँगी तभी मेरे दिल को शांति मिलेगी, तभी मेरी आग शांत होगी। मेरा साथ देने वाला इस भवन में कोई नहीं है। इसका तो सब लोग साथ देते हैं।

अगले दिन प्रातःकाल सेठ ने सेठानी से कहा– मैं आवश्यक काम से बाहर जा रहा हूँ। तुम चंदना का ध्यान रखना, उस दुःखिया का हमारे सिवा यहाँ कोई नहीं है। वैसे भी अब वो अनाथ नहीं है। अब वो हमारी बेटी है। बेटी चंदना ! मैं बाहर जा रहा हूँ, अपना ध्यान रखना। सेठानी को दो–तीन बार सेठ ने चंदना का ध्यान रखने को कहा।

सेठानी सुन–सुनकर अन्दर ही अन्दर गुस्सा हो गई। अब जाइये, जैसे वो आपकी बेटी है वैसे ही मेरी भी है। आप निश्चिन्त होकर, आराम से जाइये, मैं उसका बहुत ख्याल रखूँगी। लौटकर जब आओगे तब उससे पूछ लेना।

सेठानी को तो मौके की तलाश थी, कब ये यहाँ से जायें और चंदना मुझे मिल जाये। सेठ के जाते ही सेठानी चंदना के कक्ष में गई। हाथ पकड़ा और घसीटते हुए बाहर ले आई। चंदना पूछती रही, माँ ये तुम क्या कर रही हो, मैंने ऐसा कौनसा अपराध किया है और मेरी गलती क्या है माँ ?

गलती पूछती है कुल्टा। जब से तू मेरे घर में आई है, मेरी नींद हराम कर दी है। तूने मेरा सुख–चैन छीन लिया, मेरा आनंद खतम कर दिया, मेरे पति पर डोरे डाल रही है डायन कही की। तूने मुझे देखा नहीं, मैं तुझे अब अपना असली रूप दिखाती हूँ।

चंदना रोती हुई बोली– माँ तुम ये क्या कह रही हो, तुम्हारे पति मेरे धरम के पिता हैं, आप मेरी माँ हैं। मैं कैसे तुम्हें विश्वास दिलवाऊँ ?

सेठानी का गुस्सा बढ़ता ही जा रहा था, उसने सब दासियों को बुलाया, उनसे बोली इसके हाथ पकड़ो, जिन बालों से तू मेरे पति को वश में करना चाहती है, उन्हें ही काट देती हूँ। तेरी सुन्दरता इन काले-काले बालों से दिख रही है। बहुत घमण्ड है तुझे इन बालों पर। दासी कैंची पकड़ो और इसके सिर के सारे बाल काट डालो।

चंदना ने कहा– मैंने आपको अपनी जन्म देने वाली माँ से भी अधिक सम्मान दिया। आप मेरी माँ से भी बढ़कर हैं।

भद्रा– चुप रह, बड़ी घर में राज करने आई थी। अब मेरे पति देखेंगे मेरा असली रूप क्या है ? जब देखो चंदना-चंदना करते रहते हैं।

चंदना ने सेठानी को समझाने का बहुत प्रयास किया– माँ तुम्हें जरूर भ्रम हुआ है। माँ, मुझे गलत मत समझो।

भद्रा– अपनी गन्दी जुबान से मुझे माँ-माँ मत बोल।

चंदना मन में सोचने लगी– मैं तो सोच रही थी मेरे दुःख के दिन समाप्त हो गये। मैंने भी किसी के साथ ऐसा दुर्व्यहार किया होगा। हे प्रभु ! और कितनी परीक्षा लोगे ? सेठानी ने चन्दना के बाल कटवा दिये, सिर मुण्डवा दिया, सारे आभूषण उतरवा लिये, फटे कपड़े पहना दिये। हाथ में हथकड़ी लगा दी, पैरों को जंजीर से बाँध दिया। अपने महल के पीछे अंधेरी कोठरी में ले जाकर बिठा दिया। चंदना अब तुझे इसी में रहना है, यही खाना है, यही सोना है। अब तो उनको भी नहीं बताऊँगी, देखती हूँ कौन तुझे छुड़ाने आता है ? घर के किसी दास-दासी को भी तेरे पास नहीं आने दूँगी। आज मुझे शांति मिली है, मेरे दिल को आराम मिला है। अट्टहास करती हुई सेठानी कोठरी को ताला लगाकर ऊपर आ गई। सब दास-दासियों को सावधान कर दिया। किसी ने भी मेरे साथ कभी कोई गुस्ताखी की तो उसको भी मैं ऐसी ही सजा दूँगी। सब लोग अपना-अपना काम करो।

सारे घर के दासी–दास रो रहे थे। ये दासवृत्ति कितनी खराब है। हम इनकी नौकरी छोड़ेंगे तो भूखे मर जायेंगे। बेचारी चंदना के लिये हम लोग चाहकर भी मदद नहीं कर सकते। हमारे मालिक क्यों छोड़ गये बेचारी को ? आज मालकिन ने अच्छा नहीं किया– अब ये घर महल नहीं श्मशान लग रहा है। वो बेचारी अंधेरी कोठरी में कैसे रहेगी ? हमसे ऐसा पाप करवाया, उसके हाथ–पैर बंधवाये, वो माँ–माँ बोलती रही, उसका भोला चेहरा आँखों में घूम रहा है। पता नहीं, कब तक उसे ये सेठानी कष्ट देगी। भगवान कोई तो आ जाओ। कोई उसके माता–पिता को बुलादो, उसे कोई अच्छा व्यक्ति यहाँ से ले जाये। हमें क्षमा करना चंदना, हमारा कोई दोष नहीं है। हमें तो इनके आदेश का पालन करना पड़ता है।

स्वयं भद्रा सेठानी चंदना के लिये उड़द की दाल के छिलके और कोदों का भात टुटे–फूटे बर्तन में ले जाकर नीचे से खिसका देती थी, दो चीज खाने को देती थी। घर के नौकर भी इससे अच्छा भोजन करते थे। वे भी बोलते– बेचारी को भोजन भी ऐसा रूखा–सुखा देती है, देखकर तो उसकी भूख ही भग जायेगी। ऐसा भोजन तो आज तक हम गरीबों ने भी नहीं किया। अरे कम से कम भोजन तो अच्छा दे दो मालकिन, वो तो भूखी रहकर ही मर जायेगी। इनके अंदर तो ममता नाम की कोई चीज ही नहीं है। इसलिये भगवान ने इसकी गोद में बच्चा नहीं दिया। एक तो कोठरी में डाल दिया और ऊपर से ऐसा अन्याय। मालिक कब आयेंगे, वो ही इस मालकिन को ठिकाने लगा सकते हैं। देखा कितनी समता है चन्दना में, कभी उसकी आवाज नहीं आती है। हम सब उसकी समता को प्रणाम करती हैं। गुस्सा तो उसके चेहरे पे कभी देखा ही नहीं, वो अकेली किसको दुःख बताये, हम लोग उसके पास में भी नहीं जा सकते।

इस मालकिन को देखो, जब से सेठजी बाहर हैं, दिनभर चिल्लाती रहती है। अब तो इसके सामने सिर उठाने में भी डर लगता है।

चंदनबाला तो एक बात का चिंतन कर रही थी ये सब मेरे ही पूर्वकृत अशुभ कर्मों का फल मुझे मिल रहा है। माँ ने मुझे गलत क्यों समझा, फिर भी माँ बहुत अच्छी है। कम से कम उसने मुझे घर से नहीं निकाला, मेरा शील बचाया, मेरा धरम बच गया। मेरे शील की रक्षा की, मैं तुमसे नाराज नहीं हूँ माँ! मैं यहाँ रहकर भी बहुत खुश हूँ। मुझे तो कर्मों से लड़ना है। समता से सबका सामना करना है।

हे प्रभु ! मेरी सहन शक्ति और बढ़े। मैं किसी पर क्रोध नहीं करूँ, मेरे भाव हमेशा समता मय बने रहे। वह कारागृह ही अब चन्दना का चिन्तन–गृह बन गया। अब वहाँ भयभीत या रागी चन्दना नहीं थी अब तो वह वैरागी चन्दना बन गयी थी। उसने संकल्प कर लिया– यदि यहाँ से बंधन मुक्त हुई तो सीधे मुक्ति के पथ पर ही चलूँगी। श्री महावीर की शरण में दीक्षित हो जाऊँगी।

चंदनबाला प्रभु को याद कर रही थी, उसी समय उसे कुछ लोगों की आवाज सुनाई पड़ी। लोग कोठरी के पास से जा रहे थे। सब आपस में बात करते हुये कह रहे थे– सुना है महाश्रमण महावीर को कितने दिन हो गये घुमते हुये, पता नहीं प्रभु ने क्या विधि ले रखी है ? कितने दिन हो गये उनको विधि ही नहीं मिल रही। अरे भाई जल्दी चलो, महामुनि महावीर प्रभु कौशाम्बी में आ गये हैं। हे प्रभु ! हमारे नगर में किसी के यहाँ तो उनका आहार हो जाये उनको विधि मिल जाये। कब तक प्रभु बिना आहार के विहार करते रहेंगे।

चंदना ने सुना– प्रभु का आहार नहीं हो रहा है। मेरे प्रभु ने आहार नहीं लिया है। यह सुनकर उसने संकल्प कर लिया– जब तक प्रभु की विधि नहीं मिलेगी, तब तक मैं भी आहार नहीं करूँगी। किसी ने आवाज लगाई प्रभु इधर ही आ रहे हैं, रास्ता खाली करो। चंदनबाला ने गली में खुलने वाले द्वार को खोल दिया। मेरे प्रभु, मेरे वीर यहाँ से निकलेंगे तो मैं भी उनका दर्शन कर लूँगी।

चन्दनबाला– सोचने लगी यदि मैं बन्धन में नहीं होती तो अवश्य अपने प्रभु को निराहार नहीं रहने देती। किसी भी तरह उनकी विधी मिलाकर उनका आहार करा देती, परन्तु मैं तो इस अवस्था में हूँ। ये सौभाग्य मुझ दुःखियारी को कैसे प्राप्त होगा ?

उसने आत्मा की गहराई से पूरी भक्ति से अपने प्रभु को पुकारा– ''ओ मुक्ति के देवता ! मुझे दर्शन दो, मुझे भक्ति करने का अवसर प्रदान करो स्वामी।'' अंतरात्मा की सच्ची पुकार परमात्मा तक अवश्य पहुँचती है।

कोलाहल बढ़ता गया– अब भीड़ बढ़ने लगी, उसी भीड़ के बीच महाश्रमण महावीर आहारार्थ कारागृह की ओर आने लगे।

महाश्रमण को आते देखकर अनायास चंदनबाला भी अपने स्थान से प्रभु को पड़गाने के लिये बेड़ियों से बंधी हुई द्वार पे खड़ी हो गई। जैसे ही महाश्रमण महावीर को देखा, वह पड़गाहन करने लगी। हे स्वामी नमोऽस्तु 3.... अत्र–अत्र तिष्ठ–तिष्ठ आहार जल शुद्ध है। महामुनि वीर धीरे–धीरे चंदना के पास आते गये। महाश्रमण ने दाता (चन्दनबाला) की ओर दृष्टिपात किया व देखा एक पैर कारागृह के अन्दर व एक बाहर है। पैरों में बेड़िया व हाथों में हथकड़ियाँ हैं, सिर मुण्डा हुआ है, राजकुमारी होकर भी दासी है, स्वतंत्र रहने वाली बंधन में पड़ी हुई है। मिष्ठान्न भोजन की जगह हाथ में कोदों का भात व उड़द की दाल के छिलके हैं, नीरस भोजन है, मलीन वस्त्र हैं, ये सब नियम मिलते देखकर प्रभु ने एक कदम और आगे बढ़ाया किन्तु– जब चंदना का मुस्कुराता हुआ चेहरा प्रभु को दिखाई दिया तो वो वापस लौट गये।

मुनि वीर के मुड़ते ही चंदनबाला का आर्त्तनाद गूँज उठा, वह जोर–जोर से रोने लगी। और पुकारने लगी– हे प्रभु ! मुझ अभागन को आप भी ठुकरा कर चले जाओगे तो मुझे कौन सहारा देगा।

हे प्रभु ! लौट आओ। मेरे स्वामी! मुझ दुःखयारी पर दया करो। रोने की आवाज प्रभु के कान में पहुँची तो महाश्रमण फिर से लौटे, चंदना की तरफ कदम बढ़ाया। चंदना ने रोते हुये प्रभु का पड़गाहन किया। प्रभु आकर खड़े हुये। प्रभु को देखकर चन्दना भक्ति से आगे बढ़ी। आगे बढ़ते ही उसकी सांकल टूट गयी। उसके हाथों की हथकड़ी टूट गई। हथकड़ी सुन्दर रत्नजड़ित चूड़ियाँ बन गई, पैरों की बेड़ी पायल बन गई। सिर पर काले घने घुंघराले सुन्दर बाल आ गये। वह वस्त्र आभूषणों से अलंकृत हो गई और देह की सुन्दरता और अधिक बढ़ गई।

प्रभु के अतिशय से वह क्षणभर में सर्वांग सुन्दरी बन गई। आहार देने के लिये उड़द के छिलके (बाकले) और कोदों का भात उठाया तो वह षट्रस व्यंजन बन गया। नवधा भक्ति से चंदना ने महाश्रमण महावीर का आहार कराया।

आहार होने के बाद पंचाश्चर्य हुये। सर्वत्र महापात्र और दाता का जयघोष होने लगा। सारे नगर में प्रभु के आहार की चर्चा हवा की तरह फैल गई। वृषभदत्त सेठ के घर में बहुत दिनों के बाद महामुनि महावीर का आहार हुआ है।

भगवान महावीर ने एक दासी के हाथ का आहार लेकर दास प्रथा को समाप्त किया। नारी जाति का गौरव बढ़ाया, ऐसे तो उत्तम दाता के हाथ से आहार लेना बताया है। किसी दासी–दास के हाथ से आहार लेना वर्जित है। परन्तु प्रभु के सामने परिस्थिति दूसरी थी, चंदना दासी नहीं थी। उसे कर्मवशात् दासी बनना पड़ा, इस कारण उत्तम दाता होने से ही आहार के बाद देवों द्वारा पंचाश्चर्यों की वृष्टि हुई। उत्तम पात्र के लिये दाता भी उत्तम होना चाहिये।

पूरे नगर निवासी सेठ के घर पर बधाई देने के लिये उमड़ पड़े। सेठजी उसी समय बाहर से लौटे थे।

सेठानी को पता चला जिसे मैं दासी समझ रही थी वो तो राजकुमारी है। इसके हाथ से प्रभु का आहार हुआ है। ये तो हमारे नगर की महारानी की लाड़ली छोटी बहन है। अब क्या होगा ? मैंने ये क्या कर दिया। महारानी को पता चलेगा तो वो मुझे अवश्य कठोर दण्ड देगी। मैंने चंदना को कितना कष्ट दिया, मैंने उसकी एक नहीं सुनी, उसे बंधन में रखा, खाने–पीने को नहीं दिया। उसी समय सेठजी घर में आये। सेठानी का भयभीत चेहरा देखकर वो सब कुछ समझ गये।

स्वामी ! मुझे क्षमा करो दो, मुझे चंदना के पास ले चलो। मैंने बहुत कष्ट दिया है उसको, मैं उससे क्षमा माँगना चाहती हूँ। वो क्षमा की मूर्ति है, मुझे क्षमा कर देगी, आप मेरे साथ चलिये।

सेठ–सेठानी को लेकर नीचे कोठरी में पहुँचे। सेठानी चंदना के पैरों में गिर गई। राजकुमारी जी ! मुझे क्षमा करो दो, मेरा अपराध क्षमा करने के योग्य नहीं है। अब तुम मुझे जो भी सजा दोगी मुझे मंजूर है। मुझे दण्ड दो, रोते–रोते सेठानी ने बहुत पश्चात्ताप किया, अपनी गलती स्वीकार की, क्षमा माँगी।

चन्दना ने उसे प्रेम से उठा लिया व सांत्वना दी।

जब महारानी मृगावती को पता चला, मेरे प्रभु महावीर का नगर के सेठ वृषभदत्त के यहाँ आहार हुआ है। रानी मृगावती सेठ का सम्मान करने और बधाई देने पूरे दल–बल के साथ वहाँ पर गई। जैसे ही उसने चंदना को देखा, तो वह बोल पड़ी– बहन तू यहाँ, तुम्हें तो सैनिक कितने दिनों से ढूँढ़ रहे हैं। लाड़ली बहन ! तू कहाँ चली गई थी। माता–पिता को तेरी कितनी चिंता हो रही है ? रोते–रोते चंदना को मृगावती ने अपने गले से लगाया। तू यहाँ कैसे आई, तुझे यहाँ कौन लाया ?

चंदना बोली– दीदी क्या बताऊँ ? ये सब मेरे कर्मों का खेल है। सारी घटना आराम से बताऊँगी।

सेठानी ने कहा– महारानी जी मुझे सजा दीजिये। मैंने आपकी बहन को बहुत कष्ट दिया है। कुछ तो बोलो, तुम मुझे सजा दो।

चंदना ने अपने हाथ से भद्रा सेठानी को उठाया और समझाया– आपने तो मेरे ऊपर उपकार किया है। आप मुझे यहाँ इस प्रकार नहीं डालती तो आज प्रभु को आहार मैं कैसे करवाती ? उनकी यह विचित्र विधी कैसे मिलती ? आप ग्लानि मत कीजिये। आप मेरे लिये माता–पिता के समान ही पूज्य हैं। आपने तो मेरा शील बचाया है। मेरे धर्म की रक्षा की है। सेठ वृषभदत्त भी दुःखी हो गये, जिसे मैं अपनी बेटी बनाकर लाया था उसे बेटी का प्यार नहीं दे पाया। बेटी, मुझे क्षमा कर दो। हम दोनों तुम्हारे अपराधी हैं। तुम समता की मूरत हो, मेरे घर में तुझे बहुत कष्ट झेलने पड़े।

चंदना ने दोनों को समझाया– आप दोनों के कारण ही मुझे आज प्रभु को आहार देने का अवसर मिला है। आप के प्रति मैं कभी बुरा नहीं सोच सकती। हे पूज्य पिताजी ! आप दुःखी मत होइये। आपने तो मुझे संसार के पापी लोगों से बचाया है। वरना आप की जगह और कोई मुझे बाजार से ले जाता तो मेरा जीवन बेकार हो जाता। आपका यह उपकार जीवन भर मैं नहीं भूल सकती।

चंदना ने अपनी बहन को हरण से लेकर यहाँ तक की सारी घटना सुनाई। सुनकर मृगावती भी रोने लगी।

और कहने लगी– चन्दना ! इतनी छोटी सी उम्र में तूने बहुत कष्ट झेले हैं। तुझे राजकुमारी से दासी बनकर मेरे ही नगर में बिकना पड़ा और मुझे पता भी नहीं चला। बहन ! तू हम सब बहनों में महान है। तेरा नाम इतिहास में अजर–अमर रहेगा। लोग बड़ी श्रद्धा से तेरा नाम लेंगे। तूने जो संघर्षों का सामना किया उस कारण अपने माता–पिता का सर ऊँचा कर दिया है। अपने कुल का नाम रोशन कर दिया है। नारी पद का गौरव बढ़ा दिया है।

मुझे तो गर्व होता है, मेरी एक से बढ़कर एक बहनें हैं। त्रिशला दीदी तो जगत की माता बन गई है जिसने तीर्थंकर भगवान को जन्म दिया है। वो देवों के द्वारा पूजा को प्राप्त हुई हैं।

चेलना ने अपने अधर्मी पति को धर्मात्मा बना दिया है। तुम सबने इतिहास में अपना नाम अंकित कर दिया है। चल बहन, अब मेरे साथ महल में चल, वहाँ चलकर माता–पिता को भी तेरी सूचना देनी है। वो भी खुश हो जायेंगे। जैसे ही मृगावती के साथ चंदना जाने लगी तो सेठ–सेठानी रोने लगे। घर के सभी दास–दासी भी बड़े दुःखी हुये। दासियों ने भी चंदना से क्षमायाचना की।

राजकुमारी जी ! हमें क्षमा करना। सेठानी ने बार–बार क्षमा माँगी। सभी लोग रोते हुये चंदना को थोड़ी दूर तक छोड़ने गये।

चंदनबाला का महारानी मृगावती के महल में भव्य स्वागत हुआ। जैसे ही महाराज चेटक को चंदना का पता चला तो वो सपरिवार कौशाम्बी में आये। पुत्री को बहुत दिनों के बाद देखकर सबकी आँखें नम हो गईं।

चंदना ने अपने ऊपर बीती हुई व्यथा सबको सुनाई। सब मिल–जुलकर आनंद से कुछ दिन वहीं रुके। सुख के दिन कब बीत जाते हैं, पता ही नहीं चलता है। महाराज चेटक चंदना को साथ लेकर अपनी नगरी वैशाली में आये। वैशाली की प्रजा ने भी चंदना के आने पर भव्य अगवानी की, बहुत उत्सव मनाया।

सब कुछ होते हुये भी चंदना मन में उदास रहने लगी। अब मुझे इस संसार में नहीं रहना है। ये विषय सुख तो दुःख ही देने वाले हैं। मुझे तो मेरी मंजिल प्रभु के चरणों में मिलेगी।

महावीर भगवान विहार करते हुये ध्यान में लीन हो गये। ऋजुकुला सरिता के तट पर महाश्रमण महावीर को केवलज्ञान की प्राप्ति हो गई। समवशरण की रचना हो गई।

12 सभा लग गई परन्तु प्रभु की 66 दिन तक गणधर प्रभु के अभाव में दिव्यध्वनि नहीं खिरी।

जब चंदनबाला को प्रभु के केवलज्ञान का पता चला तो वो प्रभु के चरणों में आ गई। प्रभु के दर्शन करके, समवशरण में ही प्रभु के समक्ष आर्यिका दीक्षा ले ली। आर्यिकाओं में प्रमुख गणिनी आर्या बन गई। कठोर साधना करने लगी।

चंदनबाला के पूर्व भव

एक दिन राजा चेटक समवशरण में आये। महावीर प्रभु की स्तुति वंदना की और मनुष्यों के कोठे में जाकर बैठ गये। पुनः महाराज चेटक ने खड़े होकर प्रभु को नमन किया और गणधर प्रभु से पूछा– हे प्रभु ! मैं गणिनी आर्या चंदना के विषय में कुछ पूछना चाहता हूँ। गणधर प्रभु से जब उन्हें आज्ञा मिल गई तो राजा ने पूछा– हे प्रभु ! इस पर्याय में चंदना को इतने कष्ट क्यों मिले। इसका अपहरण क्यों हुआ,राजकुमारी को दासी क्यों बनना पड़ा ? ये ऐसा कौन सा कर्म करके आई है जिसके कारण छोटी सी उम्र में इतने कष्ट मिले। हे प्रभु ! हम विस्तार से चंदना आर्यिका के विषय में जानना चाहते हैं। इतना बोलकर चेटक राजा अपने स्थान पर बैठ गये। गणधर प्रभु ने कहा– हे राजन् ! तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है सुनो–

इसी मगध देश में एक वत्सा नाम की नगरी थी। उस नगरी में अग्निमित्र नाम का ब्राह्मण रहता था। उसके दो पत्नियाँ थीं। उसके पहली पत्नी से एक पुत्र हुआ और दूसरी पत्नी से एक पुत्री हुई। इस तरह एक पुत्र और एक पुत्री हुई। पुत्र का 'शिवभूति' नाम था और पुत्री का नाम 'चित्रसेना' था। दोनों भाई–बहन धीरे–धीरे युवावय को प्राप्त हो गये।

शिवभूति का विवाह इसी नगर में रहने वाले सोमशर्मा ब्राह्मण की पुत्री 'सोमिला' (चंदनबाला का जीव) के साथ में हो गया। और 'चित्रसेना' (भद्रा सेठानी का जीव) का विवाह भी इसी नगर में रहने वाले देवशर्मा ब्राह्मण से कर दिया। दोनों भाई बहन का विवाह हो गया। दोनों अपने–अपने परिवार में सुख से जीवन–यापन कर रहे थे।

एक दिन अचानक चित्रसेना के पति की मृत्यु हो गई। उसके पास बच्चों के पालने के लिये कुछ भी धन नहीं था, उसका पति बहुत गरीब था। पति के मरने के बाद वह बहुत दुःखी हुई। मैं कैसे अपने बच्चों को पालूँ। शिवभूति को पता चला तो वह अपनी बहन को अपने घर ले आया। अपने परिवार के साथ बहन और बहन के बच्चों का पालन–पोषण करने लगा।

वह अपने बच्चों से अधिक बहन के बच्चों का ध्यान रखता, कोई वस्तु लाकर पहले उन बच्चों को देता, खुद के बच्चों की उसने परवाह करना कम कर दिया। वह एक ही बात सोचता था, इनके पिता नहीं है। इन बच्चों को कभी पिता की कमी महसूस नहीं होने दूँगा।

बहन भी भाई के पास बहुत खुश थी। मेरा भाई मेरे लिये और मेरे बच्चों के लिये बहुत मेहनत करता है। कोई भी वस्तु बच्चे माँगे उसके पहले ही लाकर के दे देता है। हे प्रभु ! ऐसा भाई हजारों साल जिये।

थोड़े दिन तो उसकी पत्नी ये सब देखती रही, खुद के साथ और बच्चों के साथ शिवभूति का अन्याय सहन करती रही। ज्यादा दिन किसी को भी सुख की छांव नसीब नहीं होती, थोड़े दिन तक प्रेम अच्छा लगता है। जब भेदभाव दिखाई देता है वही राग–द्वेष में बदल जाता है। ईर्ष्या बढ़ने लगती है। द्वेष की आग चारों ओर फैल जाती है। वह अपने पति से झगड़ा करने लगी।

तुमको केवल बहन और उसके बच्चे ही दिखते हैं। खुद के बच्चे चाहे भूखे मर जायें, जो भी चीज घर में लाते हो उसे मुझे दिखाते तक नहीं और अपनी लाड़ली बहन को पकड़ा देते हो। क्या मैं और मेरे बच्चे भीख माँगने चले जायें? जब से वो घर में आई है वो मेरे घर की महारानी बन गई है और मुझे नौकरानी बना दिया है। अब ऐसा मैं हरर्गिज नहीं होने दूँगी। मेरे बच्चे चीज माँगते रहते हैं। इनको कुछ नहीं देते हो और उसको बिना माँगे पूरा घर लुटाने में लगे हो।

औरत में स्वभाव से ही ईर्ष्या होती है और जब सामने अन्याय होता हुआ दिखाई देता है तो और ईर्ष्या क्रोधमय बनकर सामने प्रगट हो जाती है। शिवभूति ने पत्नी को समझाया– थोड़े दिनों की बात है, इसके बच्चे जैसे ही बड़े हो जायेंगे मैं इन्हें काम पर लगा दूँगा। मेरे लिये सभी बच्चे समान हैं। मैं सबका ध्यान रखता हूँ।

जब पति ने उसकी बात नहीं सुनी और उसे प्रताड़ित किया तो वह अपनी ननद चित्रसेना से झगड़ा करने लगी और कहने लगी– खुद के पति को खा गई और अब मेरा घर बरबाद करने के लिये यहाँ आ गई। उसे गालियाँ देती, पति के बाहर निकलते ही सारा क्रोध चित्रसेना पर उतारती, अपशब्दों का प्रयोग करती।

चित्रसेना चुपचाप थोड़े दिन तो सुनती रही। वह सोचती– मैं यहाँ से चली गई तो मेरे बच्चे भूखे मर जायेंगे। ना तो मेरे पास रहने का कोई ठिकाना है, ना पेट भरने का साधन। वह दिन–रात भाभी के घर का काम करती रहती। फिर भी सोमिला उससे झगड़ती, अब तो पड़ोसियों के घरों में जाकर कहने लगी– मेरी ननद कुल्टा है, व्यभिचारिणी है। इसका मेरे पति के साथ गलत संबंध है। ये जितनी सीधी भोली–भाली दिखती है उतनी ही ये मायावी है।

जब चित्रसेना को यह बात पता चल गई तो उसे बहुत दुःख हुआ। भाभी तो माँ समान होती है, अभी तक तो अकेले में लड़ती झगड़ती थी पर अब तो मेरे ऊपर झूठा दोष लगा रही है। मेरे चारित्र पर दोषारोपण कर रही है। भाई ने मुझे गरीब जानकर सहारा दिया। इस कारण यह मुझे यहाँ से भगाना चाहती है। भाभी होकर मुझे बदनाम कर रही है। अब मैं यहाँ कैसे रहूँ? बच्चों को कहाँ लेकर जाऊँ? मेरी किस्मत कितनी फूटी है। थोड़े दिन के लिये सुख की छाया मिली थी, बच्चे खुश थे। वो भी भाभी को बर्दाश्त नहीं हो रहा है। सोमिला छोटी–छोटी बातों में उससे झगड़ने लग जाती, बिना गलती के गलती निकालती, क्रोध करती। एक दिन क्रोध में आकर चित्रसेना (भद्रा) ने निदान कर लिया। तूने जो मेरे चारित्र पर झूठा दोष लगाया है उसका बदला लेकर रहूँगी। मैं तुझे नहीं छोड़ूँगी।

सोमिला ने कहा– अपने चारित्र का इतना ही घमण्ड है तो मेरे घर से जाती क्यों नहीं ? क्यों मेरे घर में पड़ी है ?

इतना सुनते ही चित्रसेना अपने बच्चों को लेकर उसके घर से निकल गई। उसके जाते ही सोमिला अपने पति के साथ अच्छे से रहने लगी। शिवभूति को भी बड़ा दुःख हुआ। मेरी बहन को इसने बड़ा दुःख दिया, इसलिये वो चली गई ? उसे अपनी पत्नी पर बहुत क्रोध आ रहा था। पर वो कुछ कर नहीं पाया। उसने क्रोध को दबाकर रख लिया।

एक दिन 'सोमिला' (चंदनबाला का जीव) ने 'शिवगुप्त' मुनिराज को भक्ति से आहार करवाया। उसके पति को आहार का पता चला तो वह बहुत क्रोधित हुआ। सोमिला ने बड़े प्रेम से अपने पति को दिगम्बर साधुओं की महिमा बताई। उनका महत्त्व समझाया, उनकी त्याग, तपस्या के विषय में बताया, इनके समान संसार में कोई त्यागी तपस्वी नहीं होते। इनको आहार देने से धन–धान्य की वृद्धि होती है। बहुत पुण्य मिलता है।

इनको ऐसा–वैसा मत समझो, इनकी भक्ति करने से हमें सुख–शांति प्राप्त होगी। इनका आशीर्वाद जिनको मिलता है वो हमेशा सुखी रहता है। ये 24 घंटे में एक बार ही आहार लेते हैं। नंगे पैर चलते हैं, केशलोंच करते हैं। कभी किसी पर क्रोध नहीं करते हैं। सबके कल्याण की भावना करते हैं। ये किसी से कुछ नहीं लेते हैं। ऐसे महात्मा पर क्रोध करने से पाप लगता है। अगले जन्म में भी दुःख भोगने पड़ते हैं। दुःख से बचना है तो उन मुनिराज को प्रणाम करो, क्षमा माँग लो।

पत्नी के समझाने पर शिवभूति ने मुनिराज को प्रणाम किया, वह प्रसन्न हो गया, उसने भी दान की अनुमोदना की और संकल्प लिया– मैं आगे कभी भी जैन मुनियों की बुराई नहीं करूँगा, उन पर क्रोध नहीं करूँगा। हे गुरुराज! मैंने क्रोध में आकर आपको कटु वचन बोला– मुझे आप क्षमा करना।

आयु पूर्ण होने पर शिवभूति ब्राह्मण मरकर वंगदेश में कान्तपुर नगर के सुवर्णवर्मा राजा की रानी विद्युत्लेखा से 'महाबल' नाम का राजकुमार हुआ। आहारदान की अनुमोदना करने से वह राजकुमार बन गया। राजा सुवर्णवर्मा की एक बहन थी 'धनश्री'। उसका विवाह चंपा नगर के राजा 'श्रीषेण' के साथ हुआ। इसके गर्भ में सोमिला का जीव आया। 9 माह पूर्ण होने पर इसने एक राजकुमारी को जन्म दिया, उसका नाम कनकलता (चंदना का जीव) रखा। जन्म होने से पूर्व दोनों के माता–पिता ने इनका परस्पर विवाह तय कर दिया। सुवर्णवर्मा ने अपनी बहन को पुत्री के जन्म होते ही अपने नगर में बुला लिया था। दोनों बच्चों का पालन–पोषण एक साथ बनारस में हो रहा था। दोनों बच्चों का काम एक साथ होता था। दिन–रात दोनों साथ में उठते–बैठते, खेलते–सोते थे। धीरे–धीरे दोनों युवा वय को प्राप्त हो गये। दोनों ने माता–पिता को बताये बिना विवाह पूर्व ही समागम कर लिया। इससे रुष्ट होकर उन दोनों को माता–पिता ने घर से निकाल दिया।

एक दिन महाबल और कनकलता उद्यान में घूमने गये। उसी समय एक मुनिगुप्त नामक मुनिराज कान्तार चर्या के लिये उसी उद्यान में आ गये। दोनों ने जब मुनिराज को देखा तो वे समझ गये। आहारचर्या का समय हो गया है। चलो हम, दोनों पहले मुनिराज का पड़गाहन करके आहार दान दे। दोनों ने नवधा भक्ति से मुनिराज को पड़गाया जो स्वयं के लिये मावा, मिष्ठान, मोदक आदि तैयार किये थे उन्हीं से मुनिराज का आहार करवाया। आहार देकर अतिशय पुण्य बंध किया। मुनिराज का आहार होने के बाद दोनों अपने नगर मे लौट आये।

एक दिन महाबल अकेला ही वन में घूम रहा था। तभी पीछे से उसे जहरीले सर्प ने काट लिया। जहर चढ़ने से वह तत्काल मर गया। उसने मुनिराज को आहार दिया था इसलिये मरण होने पर भी उसकी दुर्गति नहीं हुई। वह मरकर उज्जैन नगर के सेठ धनदेव की सेठानी धनमित्रा से नागदत्त नाम का पुत्र हुआ। कनकलता रानी को जब पति के मरने का समाचार मिला तो वह भी आत्मघात करके मर गई। वह भी मरकर पलाश देश के राजा महाबल की काञ्चनलता रानी से पद्मलता नामक पुत्री हुई। राजकुमारी बन गई। दान देने के कारण राजा–रानी दुर्गति में नहीं गये। मनुष्य गति से मरे और पुनः मनुष्य ही बने।

उत्तम पात्र को दिया गया दान कभी निरर्थक नहीं जाता है। आहार दान परम्परा से मोक्ष का कारण है। सद्गति में ले जाता है। नागदत्त के पिता धनदेव ने दूसरा विवाह कर लिया जब उसकी माँ को दूसरे विवाह का पता चला तो धनमित्रा अपने पुत्र नागदत्त और पुत्री अर्थस्वामिनी को लेकर घर से निकल गई।

नागदत्त को धर्म के संस्कार देने के लिये वह दिगम्बर मुनिराज की शरण में गई। उनसे धर्म का स्वरूप समझकर व्रत धारण कर लिये। वह श्राविका बन गई।

अपने पुत्र को गुरु को सौंप दिया और निवेदन किया– हे गुरुवर ! आप मेरे पुत्र को पढ़ाइये, इसे अच्छा विद्वान बनाइये। मैं अपने पुत्र को आपकी शरण में रख रही हूँ। इसको स्वीकार कीजिये। मेरे पुत्र को अपनी शरण प्रदान कीजिये।

गुरुदेव ने तथाऽस्तु कहकर पुत्र को अपना शिष्य बना लिया। उसे बहुत अध्ययन करवाया, हर कला का ज्ञान दिया। छोटी सी उम्र में ही नागदत्त अच्छा विद्वान बन गया। बड़े–बड़े विद्वानों की श्रेणी में उसका नाम प्रसिद्ध हो गया।

गुरु का हम जितना विनय करते हैं, उतना ही हमारा ज्ञान बढ़ता है। विद्या की सिद्धि होती है। गुरु के द्वारा दिये हुये ज्ञान का उसने अच्छा सदुपयोग किया। शीलदत्त मुनिराज जो कि उसके शिक्षा गुरु थे। उनसे आज्ञा लेकर वह अपनी माँ के पास में आ गया। उसने उपाध्याय का पद प्राप्त किया, बहुत सा धन कमाया व अपनी माता व बहिन का भरण–पोषण करने लगा।

फिर एक दिन माँ से पूछा– मैं किसका पुत्र हूँ ? मेरे पिता कौन हैं ? वो कहाँ है ? माँ ने सब कुछ पुत्र को बता दिया। वह अपने पिता धनदत्त के पास अपना हिस्सा माँगने गया।

धनदत्त की दूसरी पत्नी से दो पुत्र हुए थे। नागदत्त सबसे बड़ा था। धनदत्त ने नागदत्त का परिचय जानकर उसे कहा–

तुम अपने दोनों छोटे भाइयों को लेकर जाओ। जहाँ मैं तुम्हें भेज रहा हूँ वह स्थान यहाँ से बहुत दूर है। परन्तु मेरा धन वही है तुमको धन चाहिये तो वहाँ तीनों भाई जाओ और धन लेकर आओ। पलाश द्वीप के पलाश नगर में जाने को तीनों भाई तैयार हो गये।

पलाश द्वीप

नागदत्त अपने गुरु से आशीर्वाद लेकर, पिता को प्रणाम करके अपने दोनों भाइयों के साथ जहाज के माध्यम से पलाश द्वीप में पहुँच गया। पलाश द्वीप का राजा महाबल था इसकी रानी काञ्चनलता के कोख से सोमिला के जीव ने पद्मलता ने राजकुमारी के रूप में जन्म लिया। एक राक्षस ने राजा समेत सारी प्रजा को मार डाला था। केवल पद्मलता को ही उसने जीवित छोड़ा था। वह अकेली उस द्वीप में रहती थी।

उन तीनों भाइयों को पलाश द्वीप को मनुष्यों से विहीन देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ। पद्मलता को देखकर उससे सारी बातें जानी। पद्मलता ने खजाना बताया और राक्षस को मारने के लिये कहा। उसने कहा राक्षस शाम के समय रोज यहाँ आता है। आप लोग उसको आते ही मार देना, वरना वो आप लोगों को भी जिन्दा नहीं छोड़ेगा। उसके आने का समय हो रहा है। आप लोग छुपकर ही उसे मार सकते हो।

नागदत्त दरवाजे के पीछे तलवार लेकर बैठ गया। थोड़ी देर बाद एक धर्मात्मा विद्याधर वहाँ आया। नागदत्त ने उसे राक्षस समझकर तलवार से उस पर वार कर दिया, वह गिर पड़ा और जोर–जोर से णमोकार मंत्र बोलने लगा। नागदत्त ने जब उसके मुँह से णमोकार मंत्र सुना तो वह दौड़कर उसके पास गया। उसका सर अपनी गोद में रखकर पूछने लगा– बंधु ! आप कौन हैं ? मैं राक्षस समझा था इसलिये मैंने आपके ऊपर वार कर दिया। मुझे क्षमा करो बंधु।

विद्याधर ने अपना परिचय दिया और णमोकार मंत्र बोलते हुये अपने प्राण तज दिये। उस दिन वहाँ राक्षस नहीं आया। विद्याधर मरकर देव बना और वहाँ से चयकर 'राजा चेटक' बना।

नागदत्त ने दोनों भाइयों के साथ सारा खजाना रस्सी के सहारे जहाज में लाकर रख दिया। पद्मलता को भी जहाज में लाकर बिठा दिया। इससे पूर्व नागदत्त ने जैसे ही पद्मलता को देखा तो दोनों ने एक–दूसरे को मन ही मन में पति–पत्नी के रूप में स्वीकार कर लिया। पद्मलता ने अपनी अमूल्य अंगूठी शकुन के तौर पे नागदत्त को पहनाई और नागदत्त ने अपनी अंगूठी पद्मलता को पहनाई।

दोनों भाइयों ने जब राजकुमारी और अमूल्य रत्न को जहाज पे लाकर रख लिया और नागदत्त को वहाँ नहीं देखा तो दोनों के मन में पाप आ गया। जहाज में आने के लिये जो रस्सी बांधी थी उन दोनों ने वो रस्सी काट दी और शीघ्र जहाज को रवाना कर दिया। नागदत्त जब महल के बाहर आया तो उसे दूर–दूर तक जहाज दिखाई नहीं दिया। उसने दोनों भाइयों को बहुत आवाज लगाई। वह दुःखी होकर पुनः वहाँ बने हुये जिनालय में आकर बैठ गया और विचारने लगा– दोनों भाइयों ने मेरे साथ छल किया है। वह प्रभु के सामने बैठकर संसार की दशा का चिंतवन कर रहा था। धन इंसान को शैतान बना देता है, धन का लोभ जिसके मन में घर कर जाता है। वहाँ सारे रिश्ते खत्म हो जाते हैं। वही काम दोनों भाइयों ने नागदत्त के साथ किया।

जिस मंदिर में नागदत्त बैठा था वही एक विद्याधर दर्शन के लिये आया। उसने नागदत्त से पूछा– तुम बड़े दुःखी लग रहे हो, कौन हो भाई ? यहाँ अकेले क्या कर रहे हो ?

नागदत्त ने अपनी सारी घटना विद्याधर को बताई।

विद्याधर ने कहा– तुम्हारी व्यथा सुनकर मुझे बड़ा दुःख हुआ पर तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हारी मदद करूँगा। बोलो, तुम्हें कहाँ जाना है ?

नागदत्त ने कहा– आप मुझे मनोहर नगर में ले चलो, वहाँ मेरी बहन रहती है। वहाँ पर मुझे छोड़ दो। बहन के पास नागदत्त आकर रहने लगा।

जब नागदत्त के दोनों भाई नकुल और सहदेव अपने घर में पहुँचे तो सबने नागदत्त के लिये पूछा– वो कहाँ है ?

तब दोनों भाइयों ने झूठ बोल दिया, वो हमारे साथ में नहीं आया, उसने मना कर दिया। वो वही रहेगा। नागदत्त की माँ को जब पता चला कि मेरा पुत्र नहीं आयेगा तो उसे विश्वास नहीं हुआ। वह नागदत्त के गुरु शीलगुप्त मुनिराज के पास गई। नमोऽस्तु किया और अपने पुत्र के लिये पूछा।

उन अवधिज्ञानी मुनिराज ने कहा– चिंता मत करो, नागदत्त सुरक्षित है।

मुनिराज ने कहा– तुम्हारा पुत्र शीघ्र आने वाला है। मुनिराज को नमोऽस्तु करके व गुरुवाणी पर विश्वास करके वह अपने घर आ गई कि अब मेरा पुत्र आ जायेगा।

धनदत्त सेठ को विश्वास हो गया कि अब नागदत्त नहीं आयेगा। इसलिए राजकुमारी पद्मलता का विवाह मेरे मंझले पुत्र से कर देना चाहिये। जबकि दोनों भाई उससे विवाह करना चाहते थे। सारी विवाह की तैयारी हो गई। बहन के यहाँ भी विवाह का निमंत्रण भेजा। वहीं नागदत्त भी था।

नागदत्त की बहन के ससुर बोले– बहू तुम्हारे मायके से निमंत्रण आया है। तुम्हारे भाई की शादी हो रही है, सबको बुलाया है। हम तो इतने गरीब हैं, शादी में हम क्या लेकर जायेंगे ?

नागदत्त से बहन के ससुर ने कहा– तुम्हारा जो छोटा भाई नकुल है, उसका पद्मलता कन्या से विवाह हो रहा है। किसी ने बताया है वह उस कन्या को कहीं से लाया है। नागदत्त सब समझ गया। मेरे भाई कितने दुष्ट प्रवृत्ति के हैं। मुझे वहीं छोड़ आये, धन भी ले लिया और राजकुमारी से विवाह कर रहे हैं। देखता हूँ उन्हें, ये विवाह अब कैसे होता है ?

नागदत्त ने बहुत सारे रत्न और अपनी अंगूठी बहन के ससुर को दे दी और कह दिया– यह अंगूठी उस कन्या को देना। नागदत्त इनके साथ अपने नगर में पहुँच गया। सबको मना कर दिया, मैं यहाँ आया हूँ किसी को कुछ भी मत बताना, उसने सबको अपने घर भेज दिया। वह स्वयं सबसे पहले अपने गुरु के पास गया। उनके दर्शन किये, आशीर्वाद लिया। वहाँ से उठकर नागदत्त अपने मित्र के पास गया, उसको सारी घटना बताई।

मित्र ने कहा– चलो, महाराज के पास चलते हैं। उन्हें सारी बात बता देते हैं। वो ही तेरा न्याय करेंगे। राजा नागदत्त को बहुत चाहता था। नागदत्त अपने मित्र के साथ राजा के पास गया। महाराज नागदत्त को देखकर बहुत प्रसन्न हुये, कुशलक्षेम पूछी। नागदत्त ने राजा को सारी बात बताई। राजा सुनकर क्रोधित हुआ। तलवार लेकर खड़ा हो गया। मैं अभी उन सबको खतम कर दूँगा। नागदत्त ने महाराज को समझाकर शांत किया। राजा ने पूरे परिवार को दरबार में बुलवाया।

नकुल और सहदेव से पूछा– तुम्हारा बड़ा भाई कहाँ है ? वे राजा के सामने झूठ बोलने की हिम्मत नहीं कर पाये। राजा ने पहले ही कह दिया था। झूठ बोले तो तुम्हें मृत्यु दण्ड दूँगा। मुझे सब कुछ पता है, जो कुछ पलाश द्वीप से लाये हो सब बताओ। जो कुछ तुम लोगों ने किया वो सबको बताओ। दोनों ने सारी बात सच–सच बता दी। अपनी गलती स्वीकार कर ली। महाराज हमें क्षमा कर दीजिये। महाराज ने पद्मलता का विवाह शुभ मुहूर्त में नागदत्त के साथ कर दिया। सारा धन तीनों भाइयों में बराबर मात्रा में बाँट दिया और नागदत्त को राजश्रेष्ठी के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया। नागदत्त को रहने के लिये बहुत सुन्दर महल दिया और बहुत सारा धन भी प्रदान किया।

नागदत्त अपनी पत्नी पद्मलता (चंदना) के साथ हर दिन 6 अंग सहित पूजन अभिषेक करने लगा। भक्तिपूर्वक मुनियों को आहारदान आदि देने लगा दान व भक्ति से अति पुण्य का संचय किया और अंत में दोनों ने संन्यास पूर्वक मरण किया।

नागदत्त सौधर्म स्वर्ग में देव बना। पद्मलता इसी स्वर्ग में देवी बनी। नागदत्त का जीव स्वर्ग से चयकर विद्याधरों के स्वामी पवनवेग विद्याधर की रानी सुवेगा से मनोवेग नाम का पुत्र हुआ। पूर्व स्नेह और मोह के कारण ही मनोवेग विद्याधर ने चंदना का हरण किया। यह विद्याधर तीन–चार भव से इसका पति बनता रहा है। वही पूर्वभव का मोह ही चंदना की ओर उसे खींच लाया और हरण कराने पर प्रेरित किया। वह भी निकट भव्य है– शीघ्र ही मोक्ष प्राप्त करेगा।

पद्मलता का जीव स्वर्ग से च्युत होकर आपकी पुत्री चंदना बनी है। इस पर्याय में जो आर्यिका दीक्षा ली है। उसके फलस्वरूप इस भव में स्त्री पर्याय का छेदन करेगी, समाधिमरण करके अच्युत स्वर्ग में देव बनेगी। वहाँ से आकर के मनुष्य बनेगी, मनुष्य पर्याय में मुनि बनकर कर्म काटकर सिद्ध अवस्था को प्राप्त करेगी। मोक्ष जायेगी।

इस भव में जो भी चंदनबाला के साथ अच्छा या बुरा व्यवहार हुआ है वह सब पूर्व भव का कुछ न कुछ संबंध होने के कारण ही हुआ है। सर्वप्रथम जिसने हरण किया, वह तीन–चार भव से इसका पति था। जंगल में कालक भील ने पहले धन लेकर उसे अपने राजा सिंहराज को दे दिया और सिंहराज ने जो उसके साथ विवाह का प्रस्ताव रखा, दुष्कर्म करने की चेष्टा की वह नागदत्त का छोटा भाई का जीव था। नकुल और सहदेव– नकुल उस भव में इससे विवाह करना चाहता था। सहदेव इस भव में मित्रवीर बना और उसने चंदना को वृषभसेन सेठ को धन लेकर बेच दिया। वृषभसेन सेठ पूर्व पर्याय में पद्मलता का ससुर धनदेव था।

चित्रसेना ने सोमिला (भाभी) से द्वेष में आकर क्रोध भाव से जो निदान किया था वह भ्रमण करती हुई इस पर्याय में भद्रा सेठानी बनी है। चंदना को देखते ही उसके ईर्ष्या व द्वेष भाव जागृत हो गया।

पहले सोमिला ने चित्रसेना को सताया था उसके बदले में अब भद्रा सेठानी ने चन्दना को घोर यातनायें दी। निदान किया था, इसने इस कारण धर्म की माता बनकर बदला लिया। पूर्व भव में जो सास थी धनमित्रा वही इस भव में सुभद्रा बनी है। सास ही इस भव में माँ बनी है। किसी भी जीव को सुख या दुःख अपने ही कर्म के कारण मिलता है। कोई किसी को कष्ट दे रहा है, प्रेम कर रहा है, द्वेष कर रहा है, राग कर रहा है, उन सबमें एक कर्म ही कारण है।

जो सोमिला ब्राह्मणी थी वही दान के फल से कनकलता बनी, वही पद्मलता राजकुमारी बनी, सौधर्म स्वर्ग में देवी बनी और **चंदनबाला** राजकुमारी बनी, आगे अच्युत स्वर्ग में देव बनेगी और मनुष्य बनकर मोक्ष जायेगी। सोमिला का पति शिवभूति दान की अनुमोदना से महाबल राजकुमार बना। फिर नागदत्त राजश्रेष्ठी और सौधर्म स्वर्ग में देव वहाँ से च्युत होकर मनोवेग विद्याधर बना। नागदत्त की बहन इस भव में मनोवेग विद्याधर की पत्नी मनोवेगा बनी।

सभी जीवों ने गणिनी आर्यिका चंदनबाला के पूर्व भव सुनकर उनको नमस्कार किया। उनकी भक्ति–स्तुति आदि की उनकी समता, क्षमा, उनकी साधना को सबने प्रणाम किया। राजा चेटक अपनी पुत्री के भव सुनकर अति प्रसन्न हुये। अगले भव में मोक्ष प्राप्त करेगी। यह जानकर तो उन्हें और भी अधिक आनंद हुआ।

महाराज चेटक ने महावीर भगवान को नमस्कार किया। गणधर भगवान को प्रणाम किया। गणिनी आर्यिका चंदनबाला को वंदामि किया।

धन्य है महासती चंदनबाला जिनके ऊपर इतने कष्ट आये, फिर भी उन्होंने हर कष्ट का समता से सामना किया। अपने धर्म को कभी नहीं छोड़ा।

इन्होंने एक बार सोमिला की पर्याय में चित्रसेना को जो कष्ट दिया उसका फल चंदनबाला राजकुमारी बनकर भोगना पड़ा। हर भव में गुरुओं की भक्ति की, प्रभु की पूजा की, परन्तु कर्म नहीं छूटे।

दान देने से राजकुमारी का पद भी मिल गया। परन्तु कर्म नहीं छूटे। जीव तीव्र या मंद रूप में जैसे कर्मों का बंध करता है जिस रूप में कर्म बांधता है उसी रूप में कर्म उदय में आता है। तीव्र रूप में बंधा है तो तीव्र रूप में उदय आता है। मंद भाव से बंधा है तो थोड़े रूप में फल देकर चला जाता है। कर्म का उदय आने पर संक्लेश भाव नहीं करना चाहिये। उदय में आये हुये कर्मों को समता से सहन करना चाहिये। आर्त्त रौद्र संक्लेश भाव करने से और अधिक कर्मों का बंध होता है।

चंदनबाला राजकुमारी का इतना पुण्य था कि उन्हें अन्तिम तीर्थंकर महावीर भगवान की मौसी बनने का सौभाग्य मिला। स्वयं तीर्थंकर भगवान ने मुनि अवस्था में आहार लेकर उनका उद्धार किया। इसी आहारदान के पुण्य से उन्हें गणिनी आर्यिका बनने का सौभाग्य मिला और साक्षात् तीर्थंकर भगवान को मुनि अवस्था में आहारदान देने के कारण निश्चित ही मोक्ष प्राप्त करने का सौभाग्य मिलेगा। समवशरण में 36 हजार आर्यिकाओं की प्रमुख गणिनी बनने का सौभाग्य मिला। इतनी सतियों में चंदनबाला ऐसी सती हुई है जिन्हें साक्षात् तीर्थंकर महावीर की शरण मिली। उन्हीं के चरणों में दीक्षा ली, सम्यग्दर्शन प्राप्त कर लिया। इस भव में दीक्षा लेकर घोर तपस्या की, अनेक व्रत उपवास किये और अंत में समाधि मरण करके स्त्री पर्याय का छेदन किया। अच्युत स्वर्ग में देवपद को प्राप्त कर लिया। आगे मोक्ष जायेगी।

स्त्री पर्याय में सर्वश्रेष्ठ पद है आर्यिकाओं का, आर्यिकाओं में उच्च पद है गणिनी माताजी का, जैसे आचार्य परमेष्ठी संघ को शिक्षा दीक्षा देते हैं उसी प्रकार गणिनी आर्यिका शिक्षा–दीक्षा प्रायश्चित आदि देती हैं। अपने संघ का संचालन करती हैं। हम भी चंदनबाला गणिनी आर्यिका को नमन करते हैं। उनके जैसी समता हमारे अन्दर भी आये। हम भी उनके समान कर्म काटकर मोक्ष प्राप्त करें।

।। इति अलम् ।।